वर्ष 40 अंक : 1 25.1.2017 बुधवार (जनवरी - फरवरी) वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

प्रदर्शनी नहीं देखी, तो समझना पचास प्रतिशत ही उत्सव देखा... – पू. वशीभाई

यह यज्ञ हमें यावच्चंद्र दिवाकरौ ठंडक देगा... – प.पू. ज्योति बहन

'बसंत' आगमन...

1 फरवरी 2017, माघ शुक्ल पंचम – 'बसंतपंचमी' का शुभ दिन ! जब वड़ताल में बिराज कर परम हितकारी - करुणाकारी सर्वोपरि श्रीहरि ने, अपने आश्रितों के तन, मन, धन व आत्मा की सर्व प्रकार से रक्षा करने हेतु, **'शिक्षापत्री'** रूपी दिव्य कवच प्रदान किया। सो, **'शिक्षापत्री'** यानि – सभी का मंगल करने वाला श्रीहरि का अन्य स्वरूप ! **श्रीजी महाराज** ने स्वहस्त से लिखा है –

'मेरे द्वारा लिखी शिक्षापत्री सभी जीवों के लिए हितकारी है। इसलिए मेरे सभी शिष्यों को तो प्रीति से इसका अनुसरण करके, सावधानी से वर्तना चाहिए और इसका उल्लघंन नहीं करना चाहिए।'

गृहस्थी या त्यागी अपना कर्तव्य पूरा करते हुए, प्रभुपरायण जीवन जीकर अपने जीव का कल्याण कराने कैसे सक्षम बनें, उसका सरल व स्पष्ट मार्ग श्रीजी महाराज ने अत्यंत कृपा करके बताया है।

और... ऐसी अमूल्य धरोहर का मर्म समझाने के लिए, आज ही के दिन श्री अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना का प्रवर्तन करने वाली दिव्य विभूति, **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्य** भी वरदान रूप है। परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण भले ही अक्षरब्रह्म श्री गुणातीतानंदस्वामी सहित युगल उपास्य स्वरूप में इस धरा पर पधारे और अनंत जीवों को आत्यंतिक कल्याण का अधिकारी-मोक्ष का भागी बनाया; पर, तत्कालीन समाज के लिए यह सत्य समझना व स्वीकारना अत्यंत कठिन-असंभव था। सो, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने अपनी अड़िग निष्ठा के बल पर इस सनातन सत्य को दृढ़ता से उजागर किया –

* *पुरुषोत्तम के बिना अक्षर का कोई अस्तित्व नहीं है और अक्षर के बिना पुरुषोत्तम प्रगटेंगे नहीं।*
* ***'परब्रह्म'** पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण (सहजानंदस्वामी) और **'अक्षरब्रह्म'** (मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी), ये दोनों तत्त्व प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप द्वारा सभी जीवों के श्रेय हेतु आज भी प्रगट हैं, कल भी और सदैव प्रगट ही रहेंगे।*

यह है श्री अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना का मर्म !

साथ ही, गगनचुंबी पाँच मंदिरों के 'मध्य सिहांसन' पर श्री अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति स्थापित करके, वच. वड़ताल 5 में **श्रीजी महाराज** द्वारा ही उद्बोधित रहस्यमय ज्ञान को, खूब अपमान - विरोध सहते हुए प्रत्येक मुमुक्षु के अंतर में बिठा कर, इस युगल उपासना की अनिवार्यता और महिमा को व्यापक किया –

*'...जैसे भगवान की मानसी पूजा करते हैं, वैसे ही उत्तम भक्त की (अर्थात्–मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी की) करें। जैसे भगवान को थाल अर्पण करते हैं, वैसे ही भगवान के भक्त को भी करें और जैसे भगवान के लिए पाँच रुपये (धन) खर्च करते हैं, वैसे ही बड़े संत के लिए करें। यूं, भगवान व उत्तम लक्षण वाले संत की अति प्रेम से जो सरीखी सेवा करें – ऐसा **'कनिष्ठ भक्त'** यदि दो जन्म या चार जन्म अथवा दस जन्म या सौ जन्म में भी **'उत्तम भक्त'** बनने वाला हो, वह इसी जन्म में बन जाए। **ऐसा भगवान और भगवान के भक्त की एक समान सेवा करने का फल है।'***

इसी प्रकार, **गुरुवर्य योगीजी महाराज** ने अपने अद्‌भुत सामर्थ्य से, अपनी अंतर की प्रसन्नता का कलश **गुरुहरि काकाजी** पर उड़ेल कर, **3 फरवरी 1952** के मंगलकारी दिन उन्हें जो साक्षात्कार कराया, उससे अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना के आध्यात्मिक इतिहास में एक नूतन पृष्ठ जुड़ गया और... प्रतीत हो गया कि वाक़ई, **'ब्रह्मस्वरूप सत्पुरुष'** द्वारा 'परब्रह्म' तत्त्व आज भी प्रगट है और शाश्वत् रहेगा। गुरुहरि काकाजी ने भी अपनी यह अनुभूति केवल अपने तक सीमित नहीं रखी, वरन् –

'अक्षरधाम के जिस तख़्त पर श्रीजी महाराज बिराजित हैं, वहीं पर योगीजी महाराज बिराजमान हैं। यह मैंने समाधि में देखा है, वो दर्शन करके धन्य हुआ हूँ' –

यह बिगुल बजा कर सभी मुमुक्षुओं के अंतर में इस बात को बिठाने का भगीरथ कार्य करके **'गुणातीत समाज'** की रचना की। फलस्वरूप,

* सत्पुरुष को निहारने का नज़रिया बदला।
* उनकी आज्ञा सहज शिरोधार्य करने की सूझ मिली।
* जीव में दृढ़ता हुई –

  मुझे मिले प्रगट और प्रत्यक्ष सत्पुरुष ही मेरी आत्मा है;

  उन्हें राज़ी करने हेतु ही अब मेरे जीवन की हर एक पल बीतेगी।
* ऐसी भावना जाग्रत हुई –

  'उनके संबंध वाले सभी मेरे लिए प्रभु के स्वरूप हैं', इस भाव से सेवा करने से,

  महाराज और मुझे मिले गुणातीत स्वरूप मुझ पर प्रसन्न होंगे।

  फलस्वरूप अध्यात्म के पथिक बने कई चैतन्य **'ब्रह्मरूप'** होकर 'ब्रह्मस्वरूप' बने

  और

  अपनी निश्रा देकर अनेकों को प्रभुप्राप्ति के मार्ग पर चलाया।

'बसंत ऋतु' की **15 फरवरी 1936** को **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने प्रगट होकर, गुरुवर्य योगीजी महाराज, गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की प्रसन्नतार्थ 1961 में साधु की दीक्षा ली। विमुख प्रकरण हुआ उससे पहले गुरुवर्य योगीजी महाराज ने दादर - मंदिर में उन्हें **'सद्‌गुरु'** की गद्दी सौंप कर आज्ञा की थी कि सभी युवा संतों को संभालना। सो, प.पू. बापा को राज़ी करने की भावना से उनकी हमेशा यही चेष्टा रहती कि प.पू. बापा के प्रेम वश जगत के शौक़ - इच्छाओं को ठुकरा कर, संत बने युवाओं की सूक्ष्म मंशाओं को मर्यादित ढंग से पूर्ण करके प.पू. बापा से जोड़े रखें।

सो, **1963** में **माणावदर** में **गुरुवर्य योगीजी महाराज** की **जयंती** मनाई जा रही थी। वहाँ पर ट्रेन द्वारा भी जाया जा सकता था। लेकिन, सभी संतों को आनंद करवाने के लिए, **पराभक्ति के मूर्तस्वरूप प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने स्टीमर द्वारा मुंबई से 'वेरावळ' बंदरगाह पहुँच कर, वहाँ से बस द्वारा

माणावदर जाने का कार्यक्रम बना कर खूब उमंग से सारी व्यवस्था की। तभी दादर-मंदिर में बन रहे 'यज्ञपुरुषदास सभागृह' के निर्माण का कार्य उन्हें सौंपा गया था और **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. महंतस्वामिजी** का उनके साथ हक़-दावे का संबंध था; सो उन्होंने उन्हें दादर-मंदिर में ही रूकने की आज्ञा की।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने उनसे कहा–

स्वामी, आपकी आज्ञा है और मैं भी मानता हूँ कि मुझे यहीं मौज़ूद रहना चाहिए। लेकिन, माणावदर काकाजी का गोकुळिया मंडल है। वे चाहेंगे ही कि मैं वहाँ आऊँ।

प.पू. महंतस्वामिजी ने कहा– *यह बात भी एकदम सच है।*

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने फिर दोहराया–

यह पक्का है कि मुझे नहीं जाना चाहिए। पर, यह भी हो सकता है कि माणावदर के मुक्त बापा से पत्र लिखवा कर भी दबाव डालें। तो, मुझे क्या करना चाहिए ?

प.पू. महंतस्वामिजी को प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का कैसा **भरोसा** होगा

और

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को भी प.पू. महंतस्वामिजी के प्रति कैसा **दिव्यभाव** होगा कि

प.पू. महंतस्वामिजी ने कहा–

मैं भी समझता हूँ कि वहाँ का मंडल जरूर बापा से ऐसा करवाएगा ही। लेकिन, उस काग़ज़ में नीचे यदि मेरे हॅन्डराईटिंग में लिखा हो कि आप आओ, तो ही आना। वर्ना आप नहीं आना।

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का सभी गुणातीत स्वरूपों के साथ का संबंध यहाँ तादृश होता है।

वास्तव में हुआ भी ऐसा ही कि प.पू. बापा का पत्र भी आया, लेकिन प.पू. महंतस्वामिजी ने कुछ लिखा नहीं था। सो, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी माणावदर नहीं गए। जबकि सूचन भी था कि एक दिन के लिए फ्लाईट से 'केशोद' आ जाएं। वहाँ से माणावदर खूब नज़दीक था। तब भी प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी नहीं गए।

हम भूलें नहीं कि 'बापास्वरूप' प.पू. महंतस्वामिजी के प्रति ऐसा **दिव्यभाव**

तब दृढ़ कराते थे –प्रकाश का भेद परखने वाले 'काकाजी-पप्पाजी' !

चैतन्यों के कैसे **आर्षदृष्टा जौहरी** का सतत जोग प.पू. बापा ने हमें दिया!!

बाद में **प.पू. बापा** द्वारा भेजे आशीर्वाद पत्र में लिखा था –

हॉल कंप्लीट करवाना।

चैतन्य मंदिर का तुम्हारा हॉल बन जाकर, तुम्हारी जीवात्मा में स्वामिश्रीजी और स्वामी शास्त्रीजी महाराज बैठ जाएंगे...

इस प्रकार, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने 'प्रगट प्रभु' के अंतर की मूर्ति लूट ली!

दूसरी ओर–स्टीमर का नाम **'सोनावती'** होने के कारण, ताड़देव मंडल से जुड़े सभी संत आनंदित थे, क्योंकि नाम **'सोनाबा'** से जुड़ा था, जिन्होंने अपने निरपेक्ष प्रेम से इन युवाओं की परवरिश की थी।

और... 1966 में विमुख प्रकरण होने के पश्चात् भी गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की निश्रा में, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के आध्यात्मिक सहभागी होने के बावजूद, अत्यंत छुपे रह कर, उनके एक शिष्य की अदा से प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने सभी संतों का पोषण करते हुए, प.पू. बापा की आज्ञा बरकरार रखी।

तदोपरांत **गुरुहरि काकाजी ने** अथाह परिश्रम से गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज एवं गुरुवर्य योगीजी महाराज के प्रासादिक स्थल **'सांकरदा'** में **'गुणातीत समाज का सर्वप्रथम मंदिर'** स्थापित करके, उन्हें महंत के रूप में नियुक्त किया।

गुरुहरि पप्पाजी के शब्दों में–

'जिसे अग्नि जला न सके, प्रारब्ध के ताप की तपिश महसूस न हो और राग-द्वेष के आवरण बाधित न हों, उसे यथार्थ अक्षररूप जानना...

आत्मा का गुण आनंद है और जगत के सभी संजोगों में कर्तव्य कर्म करते हुए भी जो आनंद में रहे, उसकी आत्मा अक्षररूप जानना।'

यूं, अपने नामानुसार प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने खूब धैर्य से संबंध वालों की सेवा करके पराभक्ति का अद्भुत दर्शन कराया है और 'अक्षर का स्वरूप' के मर्म को चरितार्थ करते हुए, संबंध में आते अनेक मुमुक्षुओं के चैतन्य का विकास करने निरंतर अग्रसर हैं।

हमारा खूब सौभाग्य है कि अक्षरधाम की इन विभूतियों ने अकारण कृपा करके हमें अपनी गोद में बिठा कर, अपने गुणातीत बाग के कुसुमों का संबंध कराया। लेकिन, हमारी नासिका में गटर की दुर्गंध भरे कीड़े की भाँति, हम इन दैवी पुष्पों की सुगंध ले नहीं पाते। अर्थात् अपनी प्रकृति, स्वभाव, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार या 'स्व' के भाव के कारण, उनकी इच्छा-मरजी-अभिप्राय को जानने के बावजूद भी उस दिशा में अग्रसर नहीं हो पाते।

नूतन वर्ष **2017** के इन मांगलिक पर्वों के शुभागमन पर भगवान स्वामिनारायण एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में हमारी अंतर की आरज़ू–प्रार्थना अब केवल शब्दों में ही निहित न रहे। **जिस सच्चाई से हमारे प्रगट स्वरूपों ने जीवन जिया है, उसे अपने वर्तन द्वारा साकार करें।** इसी हेतु समय-समय पर या किसी न किसी उपलक्ष्य में उत्सवों का आयोजन किया जाता है। पिछले वर्ष नवंबर महीने में 'पप्पाजी-तीर्थ' पर आयोजित किया गया **'काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव'** इस हेतु का स्पष्ट निर्देश कर जाता है।

गुणातीत समाज के आद्य सर्जकों की शताब्दी का महोत्सव...

अपने आश्रितों को हर प्रकार से सुखी करने के लिए, जिन्होंने इस कलियुग में सतयुग स्थापित किया, ऐसे गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के उत्तराधिकारी गुरुवर्य योगीजी महाराज एवं गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी के पवित्र चरणारविंद व निश्रा से पावन, विद्यानगर-**'गुणातीत ज्योत'** एवं मोगरी–**'ब्रह्मज्योति'** का प्रागंण **11, 12 और 13 नवंबर 2016** को अत्यंत हर्षोल्लास से भरा-भरा था। कारण–**'पप्पाजी तीर्थ'** में गुरुहरि पप्पाजी के समाधि स्थल के समक्ष पंडाल में, प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के संतों, युवकों, बहनों और गृहस्थों ने मिल कर, **'गुरुहरि पप्पाजी शताब्दी महापर्व'** के अंतर्गत **'काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव'** का चतुर्थ चरण भक्तिपूर्ण हृदय से मना रहे थे।
इस दौरान लगातार चार दिन इस निमित्त हमारे केन्द्रों से आए, मुंबई - दिल्ली एवं उत्तर भारत के करीब छः सौ मुक्तों को ब्रह्मज्योति पर **संत भगवंत साहेबजी** की निश्रा में ठहरने का सुनहरा मौका मिला।

9 नवंबर – समय के चलते बदलते युगधर्म, मूल्यों, आदर्शों, रुढ़िगत प्रथाओं, रीति-रिवाजों को ध्यान में लेते हुए, फिर भी अध्यात्म के मूल तत्त्वों को बरकरार रख कर, जिन्होंने सत्संग समाज को **'स्वरूपलक्षी नूतन साधना मार्ग'** दिया, ऐसे नूतनयुग के क्रांतिकारी सृष्टा गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी के अंतर हार्द का दर्शन कराती **बेनमून** प्रदर्शनी - **'बंधुत्व के दिव्य उपवन में'** -का उद्‌घाटन सद्‌गुरु स्वरूपों, वडील भाइयों एवं मुक्तों की हाज़िरी में हुआ। सूरत के साधक भाइयों द्वारा रची **इस प्रदर्शनी में 'गुणातीत ज्ञान' का संपूर्ण निचोड़ समाया था एवं हम पर अकारण बरसी इनकी कृपा का अद्‌भुत दर्शन हो रहा था।**

11 नवंबर – प्रबोधिनी एकादशी के मंगल दिन सुबह 8:30 बजे **'106 कुंडी विश्वमांगल्य महायज्ञ'** का शुभारंभ हुआ। गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के मुक्तों ने भाग लेकर स्वयं को कृतार्थ किया और **गुरुहरि पप्पाजी** की परावाणी द्वारा यज्ञ का निम्न आशीर्वाद पाया –

...यज्ञ यानि अपना प्रिय प्रभु को अर्पित करना... महाराज ने सात्त्विक यज्ञ करवाए। अतः उच्च स्वर से 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' जपते हुए 'ज्ञानयज्ञ' और 'योगयज्ञ' किया करना... नीरवता से, जगत भूल कर, स्थूल, सूक्ष्म और कारण के संबंधी भूल कर, चिदाकाशरूप बन कर, प्राप्ति के क़ैफ से गुरु की स्मृति सहित 'जपयज्ञ' किया करना... जगत के पदार्थों के इच्छुक लोग यज्ञ कराते हैं; हमें तो महाराज द्वारा प्रेरित सात्त्विक यज्ञ करना है। दस इंद्रियाँ, चार अतःकरण और मन-मनमुखी जीवन यानि ***'विषय'****। गुरुमुखी जीवन यानि* ***'भक्ति'****... हृदय व मन सक्रिय, सचेतन, साक्षीभाव से प्रफुल्लित रखें उसे* ***'ज्ञानयज्ञ'*** *कहा जाए। हमारे लिए तो रोज़ एकादशी... नीरवता से भगवान का स्मरण करना है। उन्होंने हमें जो स्मृतियाँ दी हों, वह याद करके जपयज्ञ करना।*

प.पू. (हंसा) दीदी ने तो एक ही वाक्य में सार रूप आशीर्वाद दिया–

आप सभी को गुरुहरि पप्पाजी महाराज और गुरुहरि काकाजी महाराज की ओर से सदैव आशीर्वाद हैं ही।

प.पू. ज्योति बहन ने आशीष प्रदान किया–

आज यह विश्वशांति यज्ञ पूरा हुआ। यहां बैठे हुए को फिलहाल गर्मी लगती होगी, लेकिन यह जो यज्ञ किया उसकी स्मृति हमें यावच्चंद्र दिवाकरौ-ठंडक देगी। यह हक़ीक़त है। पप्पाजी की परावाणी में भी एकादशी का आशीर्वाद प्राप्त किया। संयोगवश आज भी एकादशी है; यूं प्रभु प्रतीति कराते हैं कि वे कभी परोक्ष नहीं होते। वे हमारे पास अखंड हैं, हैं और हैं। इसका अनुभव हमें स्वयं करना है। हमें कुछ चाहिए तो सीधा हम भगवान से माँगें। लेकिन, हमारी मायिक बुद्धि आड़े आ जाती है कि ऐसा करो तो अच्छा। इसलिए कभी-कभी हमारे काम में बरकत नहीं आती। लेकिन, टोटल उन पर छोड़ दें, तो वे डेढ़ सौ प्रतिशत नहीं, बल्कि पंद्रह सौ प्रतिशत हमारा काम करेंगे, करेंगे और करेंगे ही। विश्व शांति के साथ, हमें हृदय की शांति देने के लिए ये स्वरूप आए हैं। हम सभी को उन्होंने अपनी पहचान करवा कर, हमारा नाम उनकी निजी जेब में लिख लिया है। सो, हम खूब भाग्यशाली हैं।

'प्रथम प्रभु और फिर कदम' इस रीति से उत्सव के प्रारंभ में यज्ञ किया। हम सभी को प्रभु ने शुद्ध कर दिया। अब घर जाकर हमें ये स्मृतियाँ करा करनी हैं... बार-बार ये स्मृतियाँ करेंगे तो इदम् हो जाएगी... कल पू. दिलीपभाई भोजाणी ने पूछा था कि आप शांति की टॅबलेट बांटते हैं? मैंने कहा–हाँ, जपयज्ञ! वो शांति की टॅबलेट है। हम सभी को यह मालूम है ही। तो, इसका अधिक से अधिक प्रयोग करके तन, मन, धन, कुटुंब और आत्मा से समृद्धिवान बनें। सभी सुखी हों–यही प्रार्थना।

अंत में–पू. सुरेशभाई गांधी ने **2017** के **विशिष्ट कॅलेन्डर** का अनावरण किया। यह कॅलेन्डर अपने प्रत्येक पृष्ठ से स्पष्ट ख्याल देता है कि गुणातीत समाज के हर एक केन्द्र की नींव में गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी ही निहित हैं और... इन दिव्य विभूतियों की प्रेरणा, बल और आशीर्वाद से आज सभी उज्ज्वल व प्रफुल्लित हैं।

सायं 7:00 बजे प.पू. हंसा दीदी की प्रेरणा से ही गुणातीत ज्योत की **पू. स्मृति बहन दवे** के मार्गदर्शन में **'तारी कृपानो नहीं पार'** नामक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन था। इस संगीतमयी नृत्यनाटिका के माध्यम से भगवान स्वामिनारायण एवं मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी द्वारा प्रणीत अखंड गुरु परंपरा के वारिसदार गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी के युगकार्य और उनकी कृपा के पात्र बने मुक्तों के समर्पण-भक्ति को सभी ने शत-शत नमन किया और... इन सभी के प्रति **'सौ-सौ सलाम'** के नाद से सभी का अंतर भावविभोर हो गया कि अहो! आज इनके अनहद् परिश्रम के सुखद परिणाम की हम अनुभूति कर रहे हैं! अंत में म्युज़ीकल चॅयर की गेम खेलते हुए गुरुहरि पप्पाजी के विविध प्रसंगों द्वारा आश्रितों पर की गई अकारण कृपा का दर्शन करके सभी ने महाप्रसाद लिया।

12 नवंबर – सुबह 9:00 बजे 'पप्पाजी तीर्थ' से थोड़ी दूरी पर शोभायात्रा के लिए सभी एकत्रित हुए। सर्वप्रथम श्री ठाकुरजी के साथ गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की मूर्ति बग्गी में शोभित थी और उनके पीछे कई

बग्गियों में प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप एवं कुछ महानुभाव विराजित थे। यह शोभायात्रा कल्याण का एक स्रोत-सी थी; क्योंकि इसमें भाग लेने वाले सिर्फ हरिभक्त ही नहीं, बल्कि मार्ग में आने-जाने वाले जिन-जिन्होंने इसका दर्शन किया, वे सभी मुफ़्त में निहाल हो गए। 'ड्रोन' द्वारा गगन से होती पुष्पवर्षा का दर्शन करते हुए; स्वामिनारायण मंत्र का जाप करते हुए, गरबे द्वारा अपना आनंद व्यक्त करते हुए और शताब्दी के ध्वज लहराते हुए, करीब 10:30 बजे सब 'पप्पाजी तीर्थ' पहुँचे। द्वार पर उपस्थित संतों ने मूर्तियों का पूजन किया। तत्पश्चात् हंसाकार आसन पर विराजित गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की मूर्तियों ने 'आशीर्वाद सभा' में प्रवेश करके, मंच के मध्य में अपना स्थान ग्रहण किया। सभा के आरंभ से पूर्व मुक्तों ने मंच पर गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी एवं ब्रह्मस्वरूपिणी सोनाबा की मूर्ति को हार अर्पण किया। 'अक्षरधाम' मंदिर-पवई की युवतियों ने भावनृत्य प्रस्तुत करते हुए गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी वंदना की। गुरुहरि पप्पाजी ने विदेश के मुक्तों को अपनी मूर्ति का जो सुख दिया-स्मृतियाँ दी हैं, उसका वर्णन मुक्तों ने '**दिव्यता प्रसरी दरिया पार** भाग-1' पुस्तक में हुबहू करके 2013 में प्रकाशित किया था, उसी पुस्तक के **भाग-2** का विमोचन पू. इलेशभाई ने इस शताब्दी निमित्त किया। तत्पश्चात् प्रत्यक्ष स्वरूपों से निम्न आशीर्वाद प्राप्त किया–

प.पू. ज्योति बहन – *7 वर्ष के काकाजी और 9 वर्ष के पप्पाजी ने हम सभी के लिए संकल्प किया कि अक्षरधाम पृथ्वी पर (नीचे) उतारना है। काकाजी ने पप्पाजी से पूछा – अक्षरधाम नीचे उतारने का अर्थ क्या? पप्पाजी ने कहा –* ***'मेरा-तेरा'*** *छोड़ कर* ***'हमारा'*** *हो, वह अक्षरधाम! यह बात साबित करती है कि वे दोनों अनादि के ही स्वरूप कहे जाएं और उन्होंने कृपा करके हमें अपने स्वरूप की पहचान कराई। अपनी माला के मनके में हमें स्थान दिया। अक्षरधाम तो स्थापित किया ही, इससे भी अधिक सभी के चैतन्य मंदिर में अक्षरधाम स्थापित किया – यह बहुत बड़ी बात हुई। 'मैं' और 'मेरा' हम छोड़ नहीं पाते। लेकिन, ऐसे स्वरूप मिलने के बाद 'मैं' और 'मेरा' कहां ग़ायब हो जाता है, वह ख्याल भी नहीं पड़ता। फलस्वरूप 'प्रभु और उनके संबंधी सभी दिव्य हैं' – यूं मनवा कर वे हमारा जीवन ऐसा बनाते हैं। ऐसे हमें कृपा से मिल गए। अंतर से हम मानें कि 'मैं गलत और वे सही' – वह बहुत बड़ी बात है।*

प्रभु का एक ही उद्यम है; वे सभी चैतन्यों की प्रगति कराते हैं – तुम सभी को प्रगति करता हुआ मानो और यदि नहीं माना जाए तो जबरदस्ती मानो। तारा बहन कहतीं कि जबरदस्ती दिव्यभाव पकड़े रखो। उन्हीं उपदेशों के कारण सारा समाज आज फला-फूला है...

बापा ने 1966 में काकाजी-पप्पाजी को स्वतंत्रता देकर गद्दी सौंपी। काकाजी-पप्पाजी ने आत्मसात् करके हरिप्रसादस्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेब की बख़्शिश देकर अपना ज्ञान सभी को सिखाया।

संस्था से निकलने के बाद 40 संतों को घर लौटने का मौका मिला था, फिर भी काकाजी-पप्पाजी के प्रति लगाव और विश्वास के कारण नहीं गए। बापा के स्वरूप की पहचान थी इसलिए नहीं गए। काकाजी-पप्पाजी ने इन स्वरूपों को स्वतंत्रता दी, तो आज चहुं ओर जय जयकार हो रहा है... बापा के सिद्धांत संप, सुहृद्भाव,

एकता का बिगुल बज रहा है... अक्षरधाम किसी मिस्त्री की भांति घड़ना नहीं है, हमारे इंद्रिय-अंतःकरण को घड़ना है। घड़ने के लिए स्वरूप जब चैतन्य का रास खेलते हैं, तो वह कोई आसान बात नहीं। लेकिन, फिर भी काकाजी-पप्पाजी ने असंभव को संभव करके 'अक्षरधाम' खड़ा कर दिया। हम सभी खूब भाग्यशाली हैं। यह जोग, यह प्राप्ति और यह संग कभी भी छूटेगा नहीं। योगीजी महाराज का सूत्र है–भगवान सबका भला करो। यह करने वाले काकाजी-पप्पाजी थे। सो, हम तो खूब नसीबदार हैं कि ये दोनों हमें मिले। कृपा करके उन्होंने हमें पकड़ा और उनकी पहचान कराई... मानव में से 'महामानव' बनाया। यह कोई आसान कार्य नहीं था। 1966 में विमुख होने से पूर्व बापा ने काकाजी-पप्पाजी से कह दिया था–

'तुम दोनों मिलकर जो करोगे, उसमें मैं आ गया; मुझे पूछने के लिए मत आना।'

सच, काकाजी-पप्पाजी को बापा के प्रति भगवद्भाव की निष्ठा थी, तो बापा के प्रति कभी मनुष्यभाव नहीं आया न किसी को आने दिया। बस, इतना ही कहा कि यह बापा की पीढ़ी चल रही है... तो जगह-जगह अक्षरधाम की पीढ़ियाँ शुरू हो गईं। अब हम सर्वत्र संप, सुहृद्भाव, एकता का बिगुल बजाएं। हमारा तंत्र उसके अनुरूप हो जाए और अक्षरधाम का सुख भोगें...

प.पू. जसु बहन – *...भीतर की गंदगी साफ़ करके, मूल वृत्ति का मूल उखाड़ने वाले डॉक्टर हमें मिले... हमारी कोई ताक़त नहीं कि हम कुछ कर सकें। सच, हमारे जैसा भाग्यशाली दुनिया में कोई नहीं। क्योंकि हमें पूर्ण मिले हैं और हमें पूर्ण बना कर छोड़ेंगे... हमारे दोष उन्होंने खुद टाले। कभी किसी से उन्होंने कोई अपेक्षा नहीं रखी; सिर्फ यही चाहा कि हमें किसी का दोष देखना नहीं है। हमने काकाजी, पप्पाजी, बा की बात मानी हो या नहीं, लेकिन उन्होंने हम में से किसी का भी एक सैकण्ड बिगड़ने नहीं दिया... हमारे पास क्या था और हमने क्या किया ? गृहस्थी या त्यागी सभी को वे गुणातीत बना कर छोड़ेंगे, इसका आनंद माना करें और उनके द्वारा दिया गया मूर्ति का सुख, स्मृति और वचन पकड़े रखें...*

प.पू. (आनंदी) दीदी – *...बिना किसी प्रयत्न के इन गुणातीत स्वरूपों ने हमें अपनी गोद में बिठा लिया और हम सभी के चैतन्य की खूब परवरिश की... इनका एक मात्र उद्यम है कि किसी प्रकार जीव का भला हो जाए। किस प्रकार से हम जीतेजी अक्षरधाम का सुख भोगते हो जाएं...*

आज हमारे लिए प्रगट स्वरूपों द्वारा काकाजी-पप्पाजी प्रगट ही हैं। तो कोई मन से मायूस न हो कि ओहो, हमने काकाजी-पप्पाजी के दर्शन नहीं किए। उसी भाव से इन स्वरूपों का दर्शन करेंगे तो वे वैसी ही अनुभूति कराएंगे। पूरी दुनिया में किसी को यह सत्संग नहीं मिला है, लेकिन जितने हम यहां बैठे हैं या प्रगट स्वरूपों से जुड़े हैं, उन्हीं की तो लॉटरी लगी है...

1984 में काकाजी ने लोनावाला शिविर में हम बहनों को बुलाया था... रात को सेवक काकाजी के शरीर को दबा रहे थे... एक सेवक उपस्थित मुक्तों को बारी-बारी से अंदर ले गए। सभी ने काकाजी के शरीर को जहां भी छुआ, वहां करंट महसूस हुआ और प्रकाश निकलता दिखाई दिया। अगले दिन सभी ने काकाजी से अपना यह अनुभव कहा तो काकाजी बार-बार यही दोहराते रहे कि बापु ने रेडियम की घड़ी रख दी होगी वगैरह-

वगैरह। फिर अंत में रात की सभा में कहा – **प्रभु अनुभव तो कितने कराते हैं, लेकिन हम कहां मानते हैं और कितना याद रखते हैं ?** यह रहस्य उन्होंने बता दिया। इन दिव्य शक्तियों का अनुभव हम सभी को अलग-अलग रूप में हुआ है। पर, वो अनुभव हम याद रखें। हमारे भीतर का प्यॉरीफिकेशन जब चले, तब दिव्यभाव से वो अनुभव याद करेंगे तो हमारी नैया पार हो जाएगी।

इन स्वरूपों में तो कोई फर्क नहीं है, लेकिन हम अपनी मायिक दृष्टि से नापते हैं, सो हमें फर्क लगता है। ये बड़े-ये छोटे, इन्होंने ज्यादा कार्य किया, इन्होंने कम किया है। काकाजी तो कहते कि संत को व्यक्तिभेद, स्थानभेद, कालभेद, जातिभेद, चोटलाभेद होता ही नहीं। यह सब हमने अपने संकुचित दायरे से पकड़ रखा है...

2010 में **दिल्ली मंदिर** का एक सेवक भीतर में चलते अंतरद्वंद्व से जूझ रहा था। तब स्थूल शरीर से हाज़िर न होते हुए भी पप्पाजी ने उसे स्वप्न में दर्शन देकर समाधान देते हुए कहा– उदास मत रहा कर, भजन कर और यही करने जैसा है। कहाँ दिल्ली का सेवक, जिसने दूर से ही पप्पाजी के दर्शन किए थे। जब पप्पाजी उसकी इतनी कॅयर कर रहे हैं, हमारी तो कितनी करते होंगे! ऐसे अनुभव हमें खूब होते हैं, लेकिन हम उसकी जुगाली नहीं करते। शिकागो में **साहेबजी** ने कहा था – ये पुरुष हमें बीच मझधार छोड़ कर नहीं गए। इन सारे समर्थ पुरुषों के हाथ में हमारा हाथ देकर गए हैं। हम सनाथ हैं और सदा सनाथ रहेंगे क्योंकि महाराज ने गुणातीत को साथ में लेकर ये संतों की परंपरा अखंडित रखी है, तो हमारे ऊपर यह सेरेछाया बनी ही रहेगी। इसलिए हम खूब निश्चिंत रहें।

दिल्ली में 1997 में **गुरुजी की हीरक जयंती** मनाई थी... पप्पाजी भी आशीर्वाद देने के लिए आए थे। तब बरसात का कोई मौसम नहीं था और एकदम बरसात होने लगी। स्वरूपों के लिए स्टेज तो वॉटरप्रूफ था, लेकिन बाकी जगह पानी गिरने लगा। तो, सभी गिरते पानी की सॅटिंग करने लगे। लेकिन, गुरुजी स्टेज पर बैठे-बैठे निश्चिंतता से काजू खा रहे थे। उन्हें कोई डिस्टर्बन्स नहीं लग रही थी। हमने सेवक से पुछवाया, तो उन्होंने सहजता से जवाब दिया कि **पप्पाजी बैठे हैं, तो मुझे क्या चिंता होनी है।** वाक़ई, हमने स्वरूपों का आसरा नहीं पकड़ा। हम अपने भीतर झांक कर देखेंगे, तो ख्याल आएगा कि **जो निश्चिंतता, निडरता हमें इनके संबंध से होनी चाहिए, उसमें अभी हमारी कसर है।**

2007 में **पप्पाजी के अस्थि विसर्जन** के लिए शाश्वत् यात्रा में हरिद्वार गए थे। वहां महापूजा के बाद विसर्जन के समय तेज़ बारिश होने लगी। पर, सारा कंट्रोल महाराज का था; क्योंकि यदि बरसात नहीं होती तो सभी खूब रोते। विधि पूरी करके सभी जल्द ही ठहरने के स्थान पर लौटे। तो, ज्योति बहन बापा का भजन गुनगुनाते हुए लिफ्ट से उतरे; तब उनमें मुझे दो सैकण्ड के लिए बापा का दर्शन हुआ और ऐसा हुआ कि बापा कहाँ से ? जबकि बापा को स्थूल देह से मैंने देखा भी नहीं है। पर, बापा ने दर्शन कराया कि उनके लाड़ले के अस्थि विसर्जन की विधि थी, तो उनका हाज़िर होना स्वाभाविक ही था। इस बात की स्मृति मैं अकसर करती हूँ। तो ऐसा होता है कि अहो ! हमें कैसे स्वरूप मिल गए हैं।

गुरुजी *अकसर कहते हैं कि हम यदि नींव के इन पुरुषों को भूल कर कुछ करने जाएंगे, तो हम में बरकत नहीं आएगी... पॅरिस के फंक्शन में* ***वशीभाई*** *ने कहा कि आज दुनिया में सभी बीमारियों के लिए क्लीनिक खुले हैं, लेकिन स्वभाव के रुपांतर के लिए इन स्वरूपों ने क्लीनिक खोला है। तो, जैसे स्वामिजी कहते हैं कि हमें तो इन पर ही सब कुछ छोड़ कर जीना है...*

हमारे गुरु तो हमारे लिए हर प्रकार से ग़रज़ू बने हैं। हमें भगवान देने के लिए वे ग़रज़ रख रहे हैं। हम सब उस योजना में उनकी 'हाँ' से 'हाँ' और 'न' से 'न' करते हो जाएं...

जैसे कभी कहीं डिसीप्लीन या ज्यादा भीड़ देखते हैं, तो हमारे मन में विचार आ जाता है कि फलां जगह यह बहुत अच्छा था। लेकिन, ***गुरुजी ने*** *बताया कि* ***अखंड ब्राह्मी कॉन्सियसनेस में जो रहना – वही सच्ची डिसीप्लीन है।*** *ये स्वरूप अखंड ब्राह्मिक कॉन्सियसनेस में रहते हैं, तो महाराज वैसी ही अनुभूति कराते हैं। अब जल्दी से जल्दी समय गवाएं बिना इन्हें काकाजी-पप्पाजी का स्वरूप मान कर सेवन करेंगे, तो जो प्राप्ति करने के लिए हम सब आतुर हैं, वो जरूर कर पाएंगे। अब इन्हें अखंड धारते हो जाएं और कर्ता-हर्ता इन स्वरूपों को ही मानें – यही सभी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना!*

गुरुहरि पप्पाजी का आशीर्वाद – *सच में हम जैसा दुनिया में कोई भाग्यशाली नहीं। योगीजी महाराज की कृपा से दिन-प्रतिदिन यह अनुभव हमें होता जा रहा है। हम कभी महाराज के संपर्क में आए होंगे और फिर उन्होंने ही गुणातीत स्वरूपों द्वारा अनुभव करवा कर, अपने में खींच-खींच कर* ***'गुणातीत समाज'*** *की स्थापना की। साथ ही साथ एकांतिकों के साथ प्रीति करवा दी। जहां जैसी जरूरत थी, वैसी प्रतीति करा कर अपने जैसे स्वरूप बख़्शिश दिए... सारी प्रेरणा योगीजी महाराज ने दी और मनन द्वारा संग कराया। दो सौ वर्ष में श्रीजी महाराज और ये स्वरूपों ने चौरासी जन्मों के पाश से मुक्त कराया। ऐसा कोई भी करवा नहीं सका और योगीजी महाराज ने बिगुल बजा कर इतना कार्य किया है। आगे भी वे ही करने वाले हैं...*

गुणातीत ने कहा है कि सुख-सुख से करना है, तो माहात्म्य युक्त स्मृति, समागम, सेवा और सुहृद्भाव, एकता से लग पड़ो। इसलिए गुणातीत ज्ञान का नवनीत दिया। इस प्रकार जीवन जीकर जाग्रतता रखें, तो वे बल देने वाले ही हैं। सुख से, सुख-दुःख से और दुःख-दुःख से भी वे ले जाएंगे... वे हमारे पीछे लगे हुए ही हैं...

अब तक हम सिर्फ भगवान में मानते थे, लेकिन भगवान और साधु दोनों का संग करना शास्त्रीजी महाराज ने सिखाया... प्रत्यक्ष साधु का संग करके बुद्धि और दिल बंद करके दो हाथ जोड़ कर वे जो कहें, वह करते रहेंगे, तो सुख-सुख से प्राप्ति कर जाएंगे। ऐसे स्वरूपों के साथ हमें आत्मबुद्धि और प्रीति करवा दी... भले हम कैसे भी हैं, लेकिन गुणातीत स्वरूप ने हमें ग्रहण किया है, तो एकदम निश्चिंतता से प्राप्ति के क़ैफ में रहें... उनका ऋण अदा करने के लिए हम भले विवश हों, लेकिन उन्हें विवश न करें। उनका मनन-चिंतन किया करें। ***उन्हें कोई रीति नहीं, भावना चाहिए...*** *पूर्ण मिले हैं और पूर्ण करके छोड़ेंगे...*

सायं 4:30 बजे 'गुरुहरि पप्पाजी शताब्दी महापर्व' सभा में - 'सच्चे देव की जय-जयकार होती ही है' - इस सत्य की प्रतीति कराते हुए घंट के कलात्मक रथ पर बिराजी गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति का प्रवेश हुआ।

तत्पश्चात् हाईड्रोलिक लिफ्ट द्वारा चहुं ओर सभी को दर्शन देते हुए, मंच के मध्य आसन पर वह दिव्य मूर्ति विराजमान हुई। अमदावाद के सत्संगी बालकों ने **'सौ आनंदो पप्पाजीनो, महापर्व छे शताब्दीनो...'** भजन पर भक्तिनृत्य करके उनकी भावना व्यक्त की। सभा संचालक **पू. बकु बहन** ने काव्यात्मक शैली में गुरुहरि पप्पाजी के संपूर्ण जीवन कार्य का संक्षिप्त वर्णन करके सभी के अंतर में गुरुहरि पप्पाजी की दिव्य स्मृतियाँ तादृश कीं। अलग-अलग केन्द्रों-स्थलों से आए मुक्तों ने गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी एवं ब्रह्मस्वरूपिणी बा की मूर्ति को हार अर्पण किया। मंच पर विराजमान गुणातीत स्वरूपों का स्वागत करने के बाद प्रगट प्रभु के प्रति निम्न शताब्दी वंदना की गई।

पू. डॉ. नीलम बहन–*...जिन नेत्रों से पप्पाजी का दर्शन किया था, उन्हीं नेत्रों से आज आप सबका दर्शन करके नमस्कार करती हूँ। जिन कानों से उनकी वाणी सुनी थी, वह भले तब समझ में आई या नहीं, परंतु उन्होंने जो बीज बोए, वो आज वृक्ष बने हैं। जिन हाथों से उनकी सेवा की थी, उन्हीं से भक्तों की सेवा करनी है। बापा ने पप्पाजी को एक ही पल में अनुभव करवा कर, सब कुछ विस्मृत करवा दिया और वे तत्काल योगी का प्रकाश बन गए। पप्पाजी ने ऐसी कृपा, करुणा और संकल्प दृष्टि हम सभी पर की है...*

'स्व' रहित हों, तभी हमारी सेवा नारायण को पहुँचती है। मात्र एक सेवा से ही प्रभु राज़ी हों, ऐसा सूत्र दिया और उन्होंने समझाया कि सामने वाले व्यक्ति में जो दिखाई देता है, वह दरअसल हम में ही होता है।

पप्पाजी की स्थूल हाज़िरी जब थी तब यह माना नहीं जाता था, परंतु अब पल-पल पप्पाजी ऐसा कराते हैं कि मेरा ही दोष है। दस वर्ष से वे स्थूल देह में नहीं, लेकिन आज भी अपना ज्ञान वे दे रहे हैं...

पप्पाजी ने हम सभी को सनाथ रखा है। ऐसे गुरुओं की हूंफ में रखा है। इन गुरु में पप्पाजी प्रगट एवं प्रत्यक्ष हैं ऐसा मानें और वे ही कर्ता-हर्ता हैं। वे पप्पाजी नहीं, लेकिन पप्पाजी उनके द्वारा कार्य कर रहे हैं... पप्पाजी एक क्षण भी हमें अकेला या हमारी उंगली छोड़ते नहीं और उन्हें मेरे द्वारा जो कराना है, वह कराते ही हैं। ऐसे पप्पाजी की प्राप्ति हुई है। जीवन धन्य बना है... हम उनके मुताबिक़ जीवन जिएं, तो वे हम सभी के लिए प्रगट, प्रत्यक्ष और हाज़राहज़ूर हैं...

पू. वशीभाई–*...हम सब बहुत भाग्यशाली हैं कि काकाजी और पप्पाजी की 'महिमा-स्मृति' द्वारा हम अक्षरधाम का सुख ले रहे हैं-मानो समाधि में हैं...* ***काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी जो आज साथ में मनाई जा रही है, वो सुहृद्भाव से बहनों ने काकाजी-पप्पाजी की प्रसन्नता पाकर एक ऐतिहासिक और अभूतपूर्व कार्य किया है...*** *जो भी उत्सव में आया है, वह* ***प्रदर्शनी*** *जरूर देखे। यदि वह* ***नहीं देखी, तो समझना आपने पचास प्रतिशत ही उत्सव देखा...*** *हमारे करोड़ों भाग्य हैं कि हमारे जीवनकाल में हम काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी यूं मना रहे हैं। काकाजी-पप्पाजी के कार्य का संक्षिप्त में* ***स्पीड, विज़न, सीम्पलीफाईड स्पिरीच्युआलिटी*** *द्वारा वर्णन करता हूँ।*

स्पीड–*जब काकाजी ताड़देव रहते थे, तो वहां रहते दासस्वामी से कहते–* ***'अब बैलगाड़ी में दिल्ली नहीं जाया जा सकता।*** *अब तो रॉकेट का ज़माना आ गया है।' महाराज ने अपने साथ गुणातीतानंदस्वामी को*

लाकर स्पिरिच्युआलिटी की डेफिनेशन 'स्पीड' कर दी। इसी प्रकार काकाजी-पप्पाजी ने खूब कम समय योगीजी महाराज के साथ काम किया... पप्पाजी कहते–1952 से 66 तक जो जिए वह जीना कहा जाए, बाकी सब तो 'खा गए-खो गया'। देखा जाए तो उस दौरान कसनी और तकलीफ़ ही थी, तब इतनी स्पीड से काम किया, तो उनका 'विज़न' कितना क्लीयर होगा ?

विज़न *–अमेरिका जैसा देश दो सौ साल से लोकतांत्रिक होने के वाबजूद भी आज 'स्त्री' को राष्ट्रपति के रूप में स्वीकार नहीं सकता। करोड़ों धन्यवाद हैं योगीजी महाराज को कि उन्होंने इतने सालों पहले कहा कि* ***'बहनें भगवान भजें तो क्या गलत है ? महाराज जोग दे देंगे।'*** *उस बात को काकाजी और पप्पाजी ने पकड़ा। उस विज़न को रीयालिटी में कन्वर्ट किया। करोड़ों धन्यवाद इन बहनों को कि उन्होंने योगीजी महाराज, काकाजी-पप्पाजी के उठाव की शोभा बढ़ाई ! और... उनके जोग में आईं बहनों को भी ऐसी ब्रह्मरूप बनाया... एक जीव को स्वभाव टाल कर निर्वासनिक बनाना बहुत कठिन कार्य है, वो इन बहनों ने किया है। इसी तरह, 51 संत बनाने का योगीबापा का विज़न था। उस योजना में काकाजी-पप्पाजी जुड़े। आज वे 51 संत क्या कार्य कर रहे हैं, वो सारी दुनिया देख रही है... उन्हें भी जितना धन्यवाद करें उतना कम है।*

सिम्पलीसिटी *– सामान्यतः स्पिरिच्युआलिटी सिम्पल है, लेकिन गुरु कहलाने वालों ने मुश्किल बना दी है। काकाजी-पप्पाजी को जो साक्षात्कार हुआ, उससे क्या हुआ कि सालों से एक रुढ़िचुस्त दायरे में स्पिरिच्युआलिटी जो पड़ी थी, प्रभु की कृपा से सबके लिए 'बहुजन सुखाय, बहुजन हिताय' खोल दिया। उन्हें यही था कि सभी को योगीजी महाराज का दर्शन हो और उनके दर्शन, समागम और आज्ञा से क्या हो सकता है, वो बात उस समय सबके पास रखी और की।*

ऐसे विज़नरी काकाजी-पप्पाजी को उनकी शताब्दी पर करोड़ों वंदन हैं। उन्होंने हमारे लिए शास्त्रों की जटिल और मुश्किल बातें सुलभ बनाईं। आने वाले सौ वर्ष तक के लिए उन्होंने आध्यात्मिक खुराक दे दी है... उन्होंने इतनी इज़ी टॅक्नोलॉजी दी है, जो आज भी उतनी वेलिड है। पप्पाजी का सूत्र है कि 'मेरे सामने आया मुक्त ब्रह्म की मूर्ति-अखंड दिव्य माना जाए।' इसे एप्लाई करना कठिन है, लेकिन पप्पाजी ने कहा है कि यदि यह वचन पालें तो स्पीड में प्रगति हो जाए। फिर स्वयं कहा भी कि दिमाग़ का चूरा हो जाए ऐसी बात है। और करामात भी बताई कि इसके लिए धुन और जपयज्ञ करना अनिवार्य है। थोड़े साल पहले ***गुरुजी*** *ने एक केलेन्डर प्रकाशित किया था। उस पर लिखा था–* ***'धुन'*** *अक्षरधाम की* ***'करन्सी'*** *है...*

इसी प्रकार काकाजी कहते थे–'नो माइन्ड लैन्डींग।' लौकिक व्यवहार से किसी के चैतन्य की प्रगति को नहीं नाप सकते। चिदाकाश में सारी कॅल्क्यूलेशन्स बदल जाती हैं... काकाजी-पप्पाजी ने यही कहा कि उनके वचनानुसार चलेंगे तो उनके द्वारा बताए सुख की अनुभूति कर सकेंगे।

एक अन्य बात दिव्य एकता-सुहृद्‌भाव-निर्दोषबुद्धि ! ***काकाजी*** *एक शब्द कहते थे–* ***'अभेददृष्टि-अविरोधवृत्ति !'*** *किसी का भी विरोध नहीं है।* ***पप्पाजी*** *बहुत अच्छा सूत्र दे गए हैं कि सभी चैतन्य प्रगति कर रहे हैं। उनका भरोसा रख कर, हम मानें कि सभी आगे बढ़ रहे हैं। स्वामिजी भी कितनी सभाओं में सुहृद्‌भाव की ही बात करते हैं। बहनों ने सुहृद्‌भाव 'पर्सोनीफाई' करके बताया... काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी पर यही*

प्रार्थना करते हैं कि आपने भगवान भजने और भजवाने का जो मार्ग प्रशस्त किया है, तो हमें मिली सेवा करके आपको राज़ी करें...

पू. पियुषभाई पनारा – *...पप्पाजी का उद्यम जीव को ब्रह्मरूप करना ही था... वे कोई दुनिया बदलने या सुधारने के लिए नहीं आए थे। अपने आश्रितों को – जिन्हें सही अर्थ में भगवान भजने हैं, उनकी मानसिकता बदलने के लिए उनका अवतरण था... सभी को वे प्रगति करा रहे हैं। चलते-फिरते चैतन्य मंदिर उन्होंने तैयार किए, वही उनकी शक्ति है। उनकी संकल्पशक्ति से ही हम सब जी रहे हैं... आज पप्पाजी को स्थूल देह छोड़े दस वर्ष हुए, अंतरमन भर जाता है। लेकिन, दिन-प्रतिदिन सबको ऐसा अनुभव होता है कि पप्पाजी हमारे साथ हैं, रक्षा करते हैं... पप्पाजी बार-बार बहनों, साधकों की शिविर में दोहराते – 'जब से विचार उठे, तभी से मंथन करके सतर्क रहना, क्योंकि सारी समस्याएँ वहीं से उत्पन्न होती हैं।'*

हे पप्पाजी महाराज ! आप प्रत्यक्ष हैं। हम सभी आपके आश्रित हैं। आपका ऋण अदा करने के लिए अपने विचार, वाणी, वर्तन से सजग रहकर आपका दिया ज्ञान पचाएँ... दासभाव से आपकी भक्ति निरंतर करते रहें...

पू. विराणी साहेब (जिला मजिस्ट्रेट) – *...पप्पाजी की शताब्दी के कार्यक्रम में आकर मैं खूब अभिभूत हुआ हूँ। भाग्यशालियों को ऐसे सुंदर अवसर का मौका मिलता है कि पप्पाजी के विषय में जानना मिला... मेरे मत अनुसार स्वामिनारायण संप्रदाय ने जिस स्तर पर व्यसनमुक्ति के लिए उठाव लिया है, ऐसा अन्य किसी के द्वारा संभव नहीं हुआ। व्यसनमुक्ति मानवजीवन के कल्याण का मार्ग है। व्यक्ति व्यसन से मुक्त होकर भगवान की भक्ति का व्यसन लगाए, तो सहज ही उसका कल्याण होता है...*

पू. जागृति बहन ठक्कर – *...पप्पाजी खुली आँखों से ध्यान करने के लिए कहते थे। आज तो खुली आँखों से समाधि का अनुभव हो रहा है। छोटी आयु में ताड़देव गई थी। वहां काकाजी-पप्पाजी विराजमान थे। काकाजी ने मुझसे भजन गाने के लिए कहा। मैंने* ***भजन*** *गाया, लेकिन* ***किसके समक्ष गाया !*** *तो उन्होंने कृपा करके जहां मेरे चैतन्य की डोर थी, वहां जोड़ दिया। वर्ना, मेरी तो कोई इच्छा या कुछ पता भी नहीं था। बस, अकारण कृपा हो गई... पप्पाजी ने मुझसे कहा था कि मस्ती में रहना। भले ही हमारा पुराना ढांचा हमें आनंद में नहीं रहने देता। लेकिन इन पुरुषों को याद करें, तो वह आनंद तुरंत लौट आता है... यह हम सभी का अनुभव है। ऐसे स्वरूप हमें मौज और मुफ़्त में मिल गए। जो हमारा थोड़ा पुरुषप्रयत्न सुन लेते हैं... गुणातीत स्वरूप हमें अक्षरधाम की समाधि में निरंतर रखते हैं... सभी स्वरूप हमारी आत्मा के कोनों में पड़ी गंदगी को साफ़ कर रहे हैं और साफ़ कर ही देंगे। पर, फिर हम उसमें एक भी दाग़ पड़ने न दें। ये अंतर जो पवित्र बना है, उसे पवित्र ही रहने दें। अभाव-अमहिमा की बातों में न जाकर शांति से पड़े ही रहें...*

शताब्दी स्मृति के रूप में **प.पू. ज्योति बहन** द्वारा *'गुरुहरि पप्पाजी की परावाणी'* की ऑडियो सी डी का उद्घाटन होने के बाद **प.पू. अश्विनभाई** (अनुपम मिशन) ने गुरुवंदना करते हुए कहा –

'...सच्चे देवल में घंट बजते हैं-जयकार होती *है', यह बात अक्षरपुरुषोत्तम के सिद्धांत के लिए ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज अपने समय में बार-बार करते थे और... आज हमारे*

समय में काकाजी - पप्पाजी ने सच्चे देव की जयकार कराई; इसी हेतु यह शताब्दी पर्व में हम आनंद व्यक्त करते हैं। काकाजी - पप्पाजी ने योगीबापा की जीवनभावना के अनुसार मनुष्य शरीर की मर्यादा में रहते हुए, स्वयं जीकर हम सबको एक अद्‌भुत दर्शन कराया और परिणामस्वरूप अद्‌भुत प्राप्ति भी हमने हमारे साधक जीवन के दौरान की...

मेरे जीवन का बड़ा सद्‌भाग्य कि मुझे पप्पाजी की सेवा मिली थी। योगीजी महाराज की जीवनभावना को पप्पाजी ने अपने जीवन में किस प्रकार आत्मसात् किया है, उसके हम साक्षी हैं। 1966 में विमुख प्रकरण के समय किसी ने भागीदार बने एक भाई की टीका करनी शुरू ही की कि पप्पाजी ने वहीं रोक कर कहा कि वो भाई यदि यहां आएं, तो दरवाज़े पर जाकर मैं उन्हें हार पहना कर स्वागत करूं कि उन्होंने हमें ऐसी समाधि करा दी। वो समय ऐसा था कि किसी न किसी प्रकार पक्षापक्षी में हम भी पड़ सकते थे। पर, शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की जीवनभावना काकाजी-पप्पाजी के जीवन से ऐसी जुड़ गई कि जिसके फलस्वरूप सच्चे देवल में आज घंट बज रहे हैं...

बापा, काकाजी, पप्पाजी और सोनाबा की गोद में पल कर हम बड़े हुए हैं, तो आज शताब्दी के पर्व पर हमारी इतनी ही प्रार्थना है कि आपकी जो भावना थी उसे हम उजागर करें। वाणी, देह के व्यवहार और विचार द्वारा हमारा जीवन ऐसा बने... प्रभु का आधार लेकर काकाजी-पप्पाजी ने जीवनभर नामस्मरण किया और हम से करवाया... यह हमें हमारे समय में मिली अद्‌भुत भेंट है। आज ये स्वरूप भले शरीर से नहीं हैं, लेकिन उनकी जीवनभावना हमारे जीवन में सतत बसी हुई है। तभी हम सुहृद्‌भाव, आत्मीयता, संवादिता की बातें करते हैं... पप्पाजी के साथ रह कर उनकी जीवनभावना को सतत देखने और अनुभव करने का मुझे मौका मिला; काकाजी के साथ रहकर भी गुणातीत ज्ञान का कायदा जो हम सीखे, उस जीवनभावना को अपने जीवन में ढाल कर शताब्दी का सच्चा अर्घ्य और समर्पण उनके श्रीचरणों में धर सकें-ऐसी बुद्धि, शक्ति और भक्ति देना।

गुणातीत समाज की स्थापना यानि – रेती में ज़हाज़ चलाने जैसा दुष्कर कार्य! ऐसे ज़हाज़ के वाहक गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी का **'स्मृतिभाव', प.पू. दिनकरभाई** एवं **प.पू. भरतभाई** को इस पर्व निमित्त अर्पण किया गया।

गुरुहरि पप्पाजी की धर्मपत्नी पू. मम्मीजी की भी शताब्दी थी, सो पटेल बिरादरी की परंपरा के मुताबिक़ गुरुहरि पप्पाजी को स्मृति रूप कलात्मक **हार** व **मुकुट** के साथ **'मटकी का भाव'** अर्पण करके, गृहस्थ भाई-भाभियों ने प्रार्थना की कि *'गृहस्थ हो या त्यागी, पर हम सभी को अंतर भगवा करना है...*

तत्पश्चात् **'पप्पा, तमे धन्य कर्या...'** डीवीडी का अनावरण करके **प.पू. दिनकरभाई** ने आशीर्वाद दिया–

...प्रगट के उपासकों की लाईफ में प्रसंग बनते हैं और उससे ही उसका 'भागवत' बनता है... शास्त्रीजी महाराज ने अपने समय में केवल भारत में ही विचरण किया। योगीजी महाराज ने अपने समय में अफ्रीका और लंडन विचरण किया। काकाजी, पप्पाजी, प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, स्वामिजी, साहेबजी एवं सभी ने पूरी

दुनिया में विचरण करके 'स्वामिनारायण' का बिगुल बजा दिया...

एक प्रार्थना करनी है कि हे काकाजी–पप्पाजी आप मुबंई से शिकागो आए, पर यदि किसी हेतु से हम कहीं फंस जाएं या अटक जाएं तो हमें वहां से निकालने के लिए भी आप ज़रूर आना...

प.पू. देवी बहन ने आशीर्दान दिया –

कितने समय से जिस दिन की राह देखते थे, वह आ गया। बापा कहते थे–झोली भर लेना। हमें खूब मिला है। सही अर्थ में संप, सुहृद्‌भाव, एकता रखें वही शताब्दी पर्व मनाया कहा जाए। देखा जाए तो एक-दूसरे के प्रति माहात्म्य के कारण हम सब इकट्ठे हुए हैं। सभी खूब भाव से आए हैं। सच, हमारे जैसा सुखी-भाग्यशाली कोई नहीं। ***आज जैसा आनंद किया, वह सतत रहे। किसी भी प्रकार का मेरा-तेरा, ये बड़े-ये छोटे का भाव आज विलीन हो गया। इसी प्रकार काकाजी, पप्पाजी हम सभी को अक्षरधाम का सुख देते रहें–यही प्रार्थना।***

मंच पर शोभित गुरुहरि पप्पाजी एवं प.पू. मम्मीजी की मूर्ति ने अल्बम का रूप लिया और गुरुहरि पप्पाजी की विभिन्न मुद्राएँ दर्शाते हुए, **प.पू. हंसा दीदी** ने खड़े रह कर **'ओहोहो आ पप्पाजी'** पुस्तक का अद्‌भुत रीति से अनावरण करके एक साधक की दृष्टि प्रदान करते हुए आशीर्वाद दिया–

पप्पाजी-काकाजी का कार्य ऐसा कि उसका वर्णन शब्दों के बजाय, वर्तन से करना है। उसके लिए हम सभी तत्पर हैं। किस प्रकार तत्पर हैं? कभी भी कोई अपना दोष स्वीकार नहीं करता, उसके लिए प्रयत्न करना पड़ता है। पर, गुरु की प्रार्थना से अब हम अपनी भूल-दोष का स्वीकार करते हैं। साधक स्वयं बात करते हुए कहता है कि यहाँ मेरी गलती-दोष है। मुझे करना नहीं था, पर मुझसे यह हो गया। कैसे हो जाता है ? तो, यह जो हमसे हो जाता है, वह टालना है। ***'हमारे पप्पाजी-काकाजी राज़ी होंगे',*** *यह भावना होगी तो संप, सुहृद्‌भाव, एकता हो ही जाएगी। हम इस सूत्र को आत्मसात् कर लें...*

संप *– ...दूसरे का दोष न देखें और अपना दोष देखें। कर्ता-हर्ता प्रभु, काकाजी-पप्पाजी को मानें तो संप रखा कहा जाए। हमारे भगवान को हमारा दोष दिखाने के लिए कितना श्रम करना पड़ता है !*

सुहृद्‌भाव *– यानि एक हृदय ! योगीबापा ने एक बार कहा था– किसी का दोष अपने सिर ले लेना... सभी स्वरुप अपने वर्तन से बताते हैं कि साधक का जीवन कैसे जिया जाए। 'मैं कुछ भी नहीं हूँ' – यह बोलना आसान है लेकिन जीना मुश्किल है। यदि कहीं चूक जाते हैं, तो समझना कि पप्पाजी को कर्ता नहीं माना। पर, 'स्व' के भाव में से बाहर निकलने के लिए मुझे उन्हें कर्ता मानना ही है। ताकि मेरी सेवा भगवान तक पहुँचे।* ***'स्व' के भाव से करी सेवा भगवान को नहीं पहुँचती...*** *इसलिए ध्यान से विचार करके प्रभु का बल लेना जरूरी है। कल यज्ञ किया तो कितना धुँआ हो रहा था कि आख़िर बाहर निकलना पड़ा। इसी प्रकार हमें हमारे अंदर के धुएँ से बाहर निकलना है।*

गुणातीतानंदस्वामी *ने कहा है – भगवान के भक्त के गुण गाने से जीव ब्रह्मरूप हो जाता है। बचपन से हमें दूसरे का देखने की आदत पड़ गई है कि फलां ठीक नहीं करता। हम अपना ही बचाव करते रहते हैं। हम अपने अहंकार-*

*'स्व' को छुपाने और पोसने के लिए बहुत कुछ ढूंढ लेते हैं। फिर, सुख कैसे प्राप्त होगा ? हमें तो सच्चा सुख लेना है। **किसी का दोष अपने सिर लेना 'भक्ति' है।** सो, दूसरे के दुःख से दुःखी होना चाहिए... जीवन के समय का ध्यान रखना है। मैं 80 वर्ष की हो गई... अब मुझे मेरा बाकी का झट् पूरा करना है। इसलिए महाराज से प्रार्थना करनी है कि जहां गलत चलें वहां रोक लेना। ऐसी आंतरिक प्रार्थना चौबीस घंटे करनी है...*

एकता *– स्वभाव, प्रकृति, रीति या ढाँचा अलग-अलग हो, तो एकता किस प्रकार रहे ? इसके लिए बस मेरे प्रभु राज़ी हों, ऐसा मुझे जीना है। मेरे भगवान की मुझे प्रसन्नता लेनी है। मैं मेरे सगे-संबंधी या शिष्य, किसी की भी नहीं। पर, ख़ुद को मिटा कर, केवल उनका होना है।* ***हे प्रभु ! मेरी मुझसे रक्षा करना।*** *मुझे केवल आप चाहिएँ। एक भी पल भक्ति बिना की नहीं चाहिए। भक्ति बिना की प्रवृत्ति करनी भी किसलिए ? इसलिए भगवान के भक्तों की महिमा का विचार, स्मृति करते हुए प्रार्थना करते हैं। बचपन से पप्पाजी ने सांसारिक संबंधों के प्रति केवल फर्ज़ ही अदा की। वे अपने जीवन दौरान आत्मारूप वर्ते और अन्यों को भी उसी रीति से वर्तन कराया। उन्होंने हमसे ऐसी आत्मीयता की है कि ऐसा महसूस होता है कि उनका स्वरूप भी हमने समझा है या नहीं ! जब समझा ही नहीं, तो पहचानने की तो बात ही कहाँ ?*

...पप्पाजी को स्थूल देह छोड़े दस वर्ष हुए। पर, उन्होंने वह महसूस नहीं होने दिया और ऐसा अनुभव होता है कि वे हमारे साथ हैं। तो, यह अनुभव दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाए... ***हे प्रभु !*** *हम केवल आपके होकर, आप राज़ी हों ऐसी भक्ति करें। हमारे जीवन की एक भी पल हमारे लिए न हो। यूं* ***हमें हमसे पृथक् रखना, ताकि भेड़चाल की नहीं, बल्कि सच्ची भक्ति कर सकें*** *– ऐसा हमारा तंत्र बने, ऐसा बल देना।*

अंत में अमेरिका निवासी सौ. आशा बहन धंधुकिया द्वारा भावपूर्ण हृदय से प्रस्तुत किए गए भजन से गुरुहरि पप्पाजी महाराज शताब्दी महापर्व सभा का समापन हुआ।

13 नवंबर – सुबह 9:30 बजे 'काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' चरण की पूर्णाहुति की सभा आरंभ हुई। मंच पर विराजित गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में, गुरुहरि पप्पाजी के कृपापात्र पू. परमभाई शाह, पू. जिज्ञेशभाई मदाणी, पू. लक्ष्मणबापा एवं गुणातीत प्रकाश के साधक पू. विरेनभाई ने स्वानुभवों द्वारा गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी के कार्यों का वर्णन करके भक्ति अदा की। इसी दौरान गुणातीत समाज के शिरछत्र **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** दर्शन-आशिष देने हेतु आए।

गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी ने गुरुवर्य योगीजी महाराज की दिव्य योजना को साकार करने के लिए, रेत में ज़हाज़ चला कर गुणातीत समाज स्थापित किया – इसी के प्रतीक रूप रथ पर विराजमान होकर, गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की मूर्ति ने सभास्थल में प्रवेश किया। मंच पर मूर्तियों को ले जाने से पूर्व प.पू. हंसा दीदी और पू. माया बहन ने मूर्तियों को हार अर्पण किया। मंच पर बायीं ओर से गुरुहरि काकाजी और दाईं ओर से गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति को दाख़िल किया गया। **देखते ही देखते, दोनों मूर्तियाँ मंच के पार्श्व में अपने-अपने अर्धहृदय लिए एक-दूजे से अपना 'ऐक्य' व्यक्त करने मध्य में साझा 'हृदयपार्श्व' में**

विराजमान हुईं ! गुरुहरि **काकाजी द्वारा** अपने और गुरुहरि पप्पाजी के बारे **कही इस बात की मानो यह अभिव्यक्ति थी –** ***'हमारे तो सांझे दिल !'***

सभा संचालक पू. हेमंतभाई मोदी द्वारा 'गुरुहरि काकाजी - पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' के प्रत्येक अक्षर का माहात्म्य बताने के बाद 'हालोल' मंडल के मुक्तों ने **'बंधुबेलड़ी अजोड़ चिंतामणी रे...'** भजन पर **भक्तिनृत्य** करके भक्ति अदा की। मंच पर गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी की मूर्ति को मुक्तों ने हार अर्पण करके भावांजलि दी और विराजित सभी प्रत्यक्ष स्वरूपों का पुष्पहार द्वारा अभिवादन किया गया। तत्पश्चात् **'कीर्तनगान'** ऑडियो सी डी का अनावरण करके **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद दिया–

...सभी ने अपने मन और अनुभव की बातें की। हम इन स्वरूपों (गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी) को प्रगट मानते हैं, इसलिए सत्संग हरियाला महसूस होता है। प्रगट इसलिए कि वे जिस मार्ग पर चले, उसी पर हम चल रहे हैं।

1988 का प्रसंग है–किसी उत्सव निमित्त हम विद्यानगर आने वाले थे। सुबह जल्दी आठ बजे अमदावाद एयरपोर्ट उतरने वाले थे। तब मैं अमदावाद नहीं ठहरता था। तो, गेट पर जैसे ही पहुँचा, वहाँ पप्पाजी हार लेकर खड़े थे। स्वाभाविक ही मेरे मुँह से निकल गया – पप्पाजी आप ! वे इंग्लिश में बोले – आई हॅव कम टु रीसीव काका ! (मैं काका को लेने आया हूँ।) ऐसा नहीं था कि वे रात को अमदावाद रुक कर, फिर सुबह आ गए थे। वे विद्यानगर से ही सीधा आए थे, यह मुझे बाद में पता चला। परसों भी मैं अमदावाद उतरा था। मुझे दिल्ली में पता चल गया था कि विद्यानगर से भाई रीसीव करने आने वाले हैं। मैंने फोन भी किया कि हम विद्यानगर सीधा नहीं आने वाले, ओवरनाइट अमदावाद रुकने वाले हैं। तो, आप लेने न आओ। भाइयों ने कहा कि हमें यह मालूम है। यूं, पप्पाजी की रीति से वर्तते हुए, हर एक केन्द्र में जो मुक्तों के प्रति पराभक्ति कायम रही है, उसके कारण आज इन पुरुषों के 'प्रगटीकरण' का एहसास होता है...

कल प्रदर्शनी देखी। काकाजी-पप्पाजी ने स्वयं वर्त कर हमें जो गुणातीत ज्ञान परोसा है और उसके अनुसार हमें जिस प्रकार वर्तना है और भविष्य में भी जिस प्रकार से वर्तना जारी रखना है, वह सब कुछ उसमें चित्रित है... ***यह उत्सव*** *जो मनाया जा रहा है, उसे* ***हम न मानें कि अब तक अपने स्वरूपों का उत्सव जो मनाते आए, ऐसा यह भी है।***

महाराज और स्वामी की जो द्विशताब्दी एवं शास्त्रीजी महाराज - योगीजी महाराज की जो शताब्दी मनाई, उसकी तुलना का यह उत्सव है। उसके जैसा यह उत्सव है। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूँ कि पिछले काफ़ी समय से स्वामिजी और साहेबजी आशीर्वद में तीन मुद्दों पर भार देते हैं–

1. *भगवान स्वामिनारायण का आसरा रखें।*
2. *उनके सच्चे संत से प्रीति करके उनकी आज्ञा का पालन करें।*
3. *संत के संबंध वाले ऐसे भक्तों-मुक्तों के समाज में सुहृद्भाव से जीवन जिएँ।*

   गुणातीत ज्ञान के ये तीन मुद्दे हैं।

❋ द्विशताब्दी धूमधाम से इसलिए मनाई कि देवी-देवताओं से पर के ***'परब्रह्म'*** और सर्वोपरि सनातन ***'अक्षरब्रह्म'*** महाराज और स्वामी के रूप में धरती पर आए और 'स्वामिनारायण धर्म' की शुरुआत हुई। यूं ***प्रणेता स्वरूपों की द्विशताब्दी*** मनाई और उसका उद्घोष किया।

'स्वामिनारायण धर्म' के वे मूलभूत सनातन स्वरूप हैं।

❋ तत्पश्चात् ***ब्रह्म और परब्रह्म को धारे*** सच्चे ***संत द्वारा*** यह ***प्रणालिका अखंडित*** रही। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने इस सत्य का व्यापक में उद्घोष किया। इसलिए हमने उनकी शताब्दी ज़ोर-शोर से मनाई।

❋ तीसरा मुद्दा–महाराज ने वचनामृत अंत्य. 21 में बताया कि ऐसे सत्संगी वैष्णव, वही हमारी नात-जात और सगे-संबंधी हैं। यह बात काकाजी ने पकड़ी। अफ्रिका से आकर पप्पाजी इसमें जुड़ गए। इस बंधुजोड़ी ने कांतिकाका के कुटुंब के साथ ऐसे कुटुंबभाव से जीकर एक ***'योगी परिवार'*** का सर्जन किया; जो आज ***'गुणातीत समाज'*** के रूप में फलाफूला है, जिसका हम दर्शन कर रहे हैं। हम बोलते हैं कुटुंबभाव-कुटुंबभाव, पर दिल को छू जाता है इन स्वरूपों का कुटुंबभाव !

एक बात करता हूँ–लंडन वाले मामा दिल्ली में धाम में गए थे। मुझे ऐसा हुआ कि पप्पाजी इस हेतु रात को ज़रूर भागदौड़ करेंगे, सो मैंने पप्पाजी से फोन पर खूब विनती की कि आप नहीं आना, मैं यहाँ बैठा हूँ। सब कुछ ठीक से निपट गया। बाद में पप्पाजी ने एक जगह कहीं बात की– ***'मुकुंद*** वहाँ था, ***मेरा भतीजा !*** तो मैं निश्चिंत था, वर्ना मुझे जाना पड़ता।' यह बात जब मैंने सुनी तो ऐसा हो गया कि अहोहो, पप्पाजी के दिल में मैं ऐसा बसा हुआ हूँ कि वे मुझे अपना 'भतीजा' कहें। इसी तरह एक बार अपने ***अश्विनभाई*** भी बोले थे–***मुझे कोई ए.बी. पटेल ('बी' मीन्स पप्पाजी की राशि) कहता*** है तो मेरी छाती एक गिट ऊपर उठ जाती है... 1984 में मेरे जन्मदिन निमित्त ***काकाजी*** दिल्ली आने वाले थे, लेकिन किसी काम से माणावदर जाना पड़ा। इसलिए उन्होंने आशीर्वाद पत्र में मुझे लिखा–***अपने 'बेटे' को क्या आशीर्वाद*** लिखना होता है ?

तो, यह था कुटुंबभाव ! इसी प्रकार हम सब किसी न किसी संबंध से जुड़े हुए हैं। ***महाराज ने तो आशीर्वाद दिए हैं कि ऐसे समाज के साथ मैं रहता हूँ...*** हाँ, ऐसे समाज का उस समय ज़्यादा विकास नहीं हुआ था। ये तो काकाजी-पप्पाजी ने तीसरा मुद्दा वर्त कर साकार किया... तो–

* स्वामिनारायण संप्रदाय के प्रणेता स्वरूप,
* श्री अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना में भगवान का अखंड प्रकटीकरण है, इस सिद्धांत को मूर्त करने वाले स्वरूप, और

ऐसे ही इस ***'गुणातीत समाज' के 'आद्य सर्जक'*** जो हैं, उनका उत्सव मनाया जा रहा है, वह विशेषता है।

...काकाजी-पप्पाजी का कार्य क्या ? **वचनामृत अंत्य. प्रकरण के 21 में महाराज ने आत्मबुद्धि-प्रीति और कुटुंबभाव से जीते समाज का जो निर्माण चाहा, इस बात को क्रियान्वित करके साकार**

किया, वह उनका दिव्य गूढ़ कार्य है। *आज यह जो समाज इकट्ठा हुआ है, इसे देख कर* ***सच में- हक़ीक़त में ये दोनों स्वरूप खूब राज़ी होते होंगे।***

उनकी शताब्दी मना रहे हैं इसलिए नहीं, बल्कि राज़ी इसलिए होते होंगे कि अलग-अलग प्रवाहों में बँटे हुए हम सभी आज इकट्ठे होकर, जिस सर्वदेशीयता से दोनों स्वरूपों की शताब्दी इकट्ठी मना रहे हैं। *और यही हमने सच्ची शताब्दी मनाई...*

सर्वदेशीयता हमारे गुणातीत समाज का मुद्रालेख है। *कारण–सारा गुणातीत समाज काकाजी-पप्पाजी का सर्जन है, उनकी एक जीवंत स्मृति है... समाज चिरंजीव रहेगा, तो काकाजी और पप्पाजी का दर्शन भी शाश्वत्-सनातन रहेगा।*

आख़िर में पप्पाजी ने भी कहा था– मेरा संकल्प है कि 'संप, सुहृद्‌भाव, एकता' से तुम जीओ। ***यही मेरी मूर्ति है।*** *बहनों ने वैसा ही जिया है। आज जो दर्शन हो रहा है, वह बताता है कि* ***मूर्ति आज भी वैसी ही 'अखंडित' है।*** *इसलिए बहनों को कोटि, कोटि, कोटि धन्यवाद कि ऐसा सबको दर्शन कराया।*

इसी हेतु 1984 में काकाजी ने मुझे लंडन से एक पत्र में लिखा था–मैंने तो हमारा सब कुछ साझा ही गिना है। ***मेरा-तेरा, निजी-पराया नहीं रखना।*** *हमें इतना ही सिखाना है। बाकी सब तो सभी मुक्त करते ही हैं...*

मैं सोच में पड़ गया कि ***'बाकी सब तो सभी मुक्त करते हैं' –वह क्या ?***

सो, जब काकाजी मिले और मैंने उनसे पूछा, तो वे बोले–

यही कि यह अमदावाद, यह वड़ताल, यह बोचासण... वो तो सब मुक्त करते ही हैं। पर, हम ऐसा न करें। हमारा सब कुछ साझा !

इसलिए इस प्रकार का भेदभाव भी कि ***यह हरिधाम, यह ब्रह्मज्योति, यह गुणातीत ज्योत, यह दिल्ली - ऐसा फर्क भी हम नहीं रखें, हमारा सब कुछ साझा है।***

ऐसा नहीं रखेंगे, तो काकाजी ने कहा था–फिर रहस्य को नहीं समझे।

'साझा' शब्द के इस रहस्य को पकड़ा कर इन पुरुषों ने आज तक हमें इस प्रकार चलाया है, चला रहे हैं और साझे की इसी रीति से हम चलते रहें–यही आज हम काकाजी-पप्पाजी के प्रति शताब्दी निमित्त भावांजलि अर्पित करेंगे। वर्ना तो काकाजी के शब्दों में नौटंकी ही करते हैं।

काकाजी स्थूल देह से थे, तब तो यही कहते थे कि नौटंकी बंद करो। पर, अब वे ऐसा नहीं कहेंगे।

भगवद् गोमंडल में 'साझा' शब्द का अर्थ बताया है- अविभक्त, हिस्सा बँटा न हो–ऐसा संयुक्त ! ***काकाजी को ऐसे संयुक्तभाव से हमेशा वर्तते हुए देखा है।*** *मैंने देखा है कि हमें कुछ प्रसाद दें, प्रशंसा करें या डाँटे भी, तब वे यह नहीं देखते थे कि इसे मेरे साथ लगाव है या नहीं।*

1984 का एक प्रसंग है– ***'गुणातीत ज्योत'*** *के हॉल में सभा करने के बाद वे बाहर निकल रहे थे। मैं काकाजी के पीछे था। सामने से (हंसा) दीदी को आते हुए देखा, तो मैं पीछे हट गया। मोजड़ी पहनते-पहनते* ***काकाजी*** *ने दीदी से एदकम पूछा– प्रेम बहन को इस उत्सव के लिए कहलवाया था ? दीदी ने कहा–अरे ! वहां नहीं*

*कहा था। काकाजी ने फट् कहा – **हमें केवल मूर्ति में अकेले रहना है, बाकी हर क्रिया में सभी को साथ लेकर चलना है।** यह है काकाजी का सिद्धांत।*

***पप्पाजी** ने इसे दूसरे शब्दों में कहा – भावात्मक एकता से सभी एकाकार वर्तें।*

*सो, **महाराज का तीसरा संकल्प कि ऐसे एक समाज का निर्माण करना – वही काकाजी-पप्पाजी का जीवन कार्य !***

इससे विशेष – वे (काकाजी - पप्पाजी) स्त्रीपुरुष भाव से परे थे, इसलिए बापा ने उन्हें बहनों का कार्य संभालने की आज्ञा दी। शुरुआत में तो काकाजी ही बहनों से बातें करते थे। पप्पाजी तो उस समय पैर लंबे करके, आँखें मूंद कर बैठे रहते थे। इस विषय में खूब टीका - चर्चा भी चली थी कि वहां मर्यादा नहीं इत्यादि। यह बात बापा तक पहुँची।

*बापा ने एक ही जवाब दिया कि **दादुभाई बहनों से बातें करें, उसमें क्या हरज़ है ?***

*यूं, **काकाजी और पप्पाजी निष्काम मूर्ति थीं, तो हमारी बहनों का कार्य हुआ।***

दूसरी ओर – बापा को भी इन पुरुषों का कितना भरोसा होगा ?

*काकाजी कहते थे कि **सच्ची बात का विरोध होता है, लेकिन विघ्न बाधारूप नहीं होते... आज सभी केन्द्रों की बहनें गौरव बन कर समाज में कार्य कर रही हैं...***

*सो, आज पक्का करें कि ये विभूति हमें **'सर्वदेशीयता'** का जो मंत्र देकर गई हैं, उसे सच्चे स्वरूप में अंतर से स्वीकार कर हम वर्तन करते रहें – यही सच्ची शताब्दी मनाई और यही सच्ची भावांजलि !*

पू. विट्ठल फुआ ने शताब्दी वंदना की –

*...1966 में संस्था से अलग होने के तीन-चार महीने बाद, मैं और साहेब बापा के दर्शनार्थ गोरियाद गए। खूब अपशब्द सुनने के बाद भी थोड़ी देर वहां बैठे रहे। बापा ने बहनों के लिए पौंक का प्रसाद दिया और माया का तांडव होने के कारण झट् निकल जाने की आज्ञा दी। बहनों ने पौंक का प्रसाद जगह - जगह सबको भेजा... यूं बापा शुरुआत से ही हमारे साथ थे। तब विदेश के सात-आठ हरिभक्त पप्पाजी को प्रतिवर्ष धन की सेवा भेजते थे। उसमें से **पप्पाजी** मेरे द्वारा बापा को हमेशा सेवा भिजवाते थे। बापा से निजी तौर पर मिलने का मुझे अवसर प्राप्त होता था...*

सच, पप्पाजी ने प्रमाणिकता से अक्षरशः बापा की आज्ञा पाली है। उनके प्रति बापा खूब प्रसन्नता व्यक्त करते...

***काकाजी** के विषय में कहूं तो विमुख प्रकरण से पहले कपडवंज में मुझे व्यापार की एक शाखा खोलनी थी। योगीजी महाराज को उसका उद्घाटन करने आने के लिए मैंने पत्र लिखा। तो, बापा ने उत्तर में लिखा कि **दादुभाई** वहाँ छात्रालय के कार्य के लिए विराजमान हैं। **आप उनसे उद्घाटन कराओगे, तो उनमें मैं आ ही गया...** बापा के हृदय में इन स्वरूपों की अखंड महिमा थी...*

***चार पंखुड़ी के इस सत्संग की नींव में काकाजी - पप्पाजी हैं...** फलस्वरूप एकदम निष्ठावान समाज का सर्जन हुआ है। सो, इनका ऋण तो हम चुका नहीं सकते...*

मुकुंदजीवनस्वामी *ने जैसे कहा कि सर्वदेशीय दृष्टि व्यापक रीति से सभी में प्रगटे। जहां हैं वहां बापा की मूर्ति में लीन होकर बापा का युगकार्य और बंधुजोड़ी की जो इच्छा थी, उसके अनुसार विकास होता रहे–ऐसे आशीर्वाद सभी स्वरूप दें...*

प.पू. भरतभाई ने आशीर्वाद दिया–

...आज स्वरूपों से आशीर्वाद लेना है... काकाजी ने क्या कार्य किया वह एक प्रसंग द्वारा बताता हूँ। एक भक्त ने काकाजी से कहा कि हम इतने सालों से आपके पास आ रहे हैं। इतने सालों से सत्संग कर रहे हैं, लेकिन हमें कुछ मिला नहीं है। काकाजी ने कहा–बैठो और लिखो।

1. *ब्रह्मविद्या के कॉलेज़ के लिए आपकी कोई क़ाबलियत नहीं है, फिर भी आपको इस कॉलेज़ में दाख़िला मिला है। वो पहली प्राप्ति।*
2. *ब्रह्मविद्या के इस कॉलेज़ की शर्त है कि किसी का कुछ भी देखो मत, हर एक का गुण ग्रहण करो, किसी के अवगुण-अभाव में जाओ नहीं। यह एक शर्त है, फिर भी आप ऐसा करते हो और आपको हम 'गॅट आउट' नहीं करते हैं।*
3. *ऐसे अभाव-अवगुण की बातें करके भेदभाव खड़े करते हो, लेकिन उसका प्रारब्ध आपको न लगे, इसलिए मैं भजन करता हूँ।*

   इससे ज़्यादा आपको क्या प्राप्ति चाहिए ?

इससे कहने का तात्पर्य यह है कि इन पुरुषों ने हम पर अकारण कृपा की। यह सत्संग और माहात्म्य जो हमारे जीव में बिठाया है, उसके कारण आज हम सब आनंद के माहौल में हैं...

*पप्पाजी खूब स्पष्ट बात करते थे। एक भक्त ने उनसे पूछा कि ऐसा कहा जाता है कि परेशानी आए तो माला फेरना। लेकिन, कब तक फिराएँ? पप्पाजी ने तुरंत कहा–जब तक परेशानी टले नहीं, तब तक फिराओ। परेशानी एक मिनिट में टले तो एक मिनिट, एक घंटे में टले तो एक घंटा। अर्थात्–**सारी समस्याओं का हल भजन ही है।** तो, हम यह करते रहें। ये पुरुष आज भी हमारे लिए बहुत कर रहे हैं। ये प्रगट स्वरूप भी परिश्रम करके हमें देते ही रहे हैं। तो, हम बस उसके क़ाबिल हो जाएँ... आपकी प्रसन्नता प्राप्त करें...*

लंडन के **पू. दिलीपभाई भोजाणी** ने शताब्दी वंदना करते हुए कहा–

...1977 में गुरुहरि पप्पाजी के प्रथम दर्शन हुए... शांतिभाई के आग्रह पर मैं सुबह संघध्यान में आया। तो शांतिभाई ने कहा कि हम जितनी देर ध्यान करेंगे, उतनी देर तुम बॉर्ड पर लिखे ब्रह्मसूत्र पढ़ना... समय पूरा हुआ, लेकिन वह पढ़ते हुए मुझे ख्याल नहीं पड़ा कि पप्पाजी कब मुझे कीक मारते हुए चले गए। लेकिन, उसके द्वारा वे मेरे जीव में बैठ गए...

हम कहते हैं न कि बड़े पुरुषों की हम पर अनहद् कृपा हुई। तो, कृपा यह हुई कि इन पुरुषों ने हमें अपना माना और हमें जीतेजी अक्षरधाम का सुख देना है, ऐसा वचन दिया। दोनों पुरुषों ने सबके जीवन में कार्य किया। 1973 में काकाजी और साहेब हमारे घर भोजन ग्रहण करने के लिए आए थे। तब हम लंडन में सेटल ही हो

रहे थे। हमारे मकान मालिक रामभाई मिस्त्री काकाजी के दर्शनार्थ आए। काकाजी ने उन्हें गाजर का हलवा खिलाया। उसके बाद रामभाई जब भी मिले तो यही कहा कि ***दादुकाका तो 'जादुकाका'*** *हैं। जब से उन्होंने मुझे हलवा खिलाया है, तब से मेरे जीवन में सुख-सुख है... ये सत्पुरुष सबको अलग-अलग प्रकार से संबंध देकर अपना बनाते हैं और आत्मा से चिपके विषयों को साफ़ करते हैं... अपना संबंध देकर इन पुरुषों ने प्रगति कराई है... काकाजी-पप्पाजी पहले से ही निर्धारित करके आए थे कि मुझे इन सभी मुक्तों का कल्याण करके अक्षरधाम का अधिकारी बनाना है...*

मुझे मेरे फाधर से बहुत लगाव था। एक दिन मुझे एहसास हुआ कि मैंने अपने फाधर से जितना प्रेम किया या उन्होंने मुझसे किया, उससे अनंत गुणा प्रेम गुरुहरि पप्पाजी महाराज ने मुझसे किया... सच, बहुत कृपा हुई है। अब तो भजन व स्मृति करते रहने की आदत पड़ती जाए; बाकी मार्गदर्शन के लिए तो प्रत्यक्ष स्वरूप हाज़िर ही हैं। अत्यंत परिश्रम करके वे हमें आशीर्वाद देते ही रहते हैं... भगवान स्वामिनारायण को अखंड धारे काकाजी-पप्पाजी की भेंट मिलने से सभी खूब सुखी हैं... जैसे कि ***गुरुजी*** *ने कहा – आपस में आत्मीयता और स्मृतियाँ बढ़ती जाए तथा इन पुरुषों के बल से सुख के भोक्ता बनते जाएं – ऐसी कृपा गुरुहरि पप्पाजी-काकाजी बरसाएँ...*

मुक्तों द्वारा शताब्दी वंदना उपरांत, पू. पियुषभाई पनारा द्वारा **'रेत में ज़हाज़'** उत्सव के प्रतीक की भावना का बोध कराने के बाद, संतों-व्रतधारी भाइयों ने मंचस्थ सभी स्वरूपों को मॉमेन्टो अर्पण किया। साथ ही साथ, शताब्दी पर्व निमित्त स्वरूपों ने 'केक कटिंग' की।

संत भगवंत साहेबजी ने **'अक्षरधाम की विरल विभूति'** डी वी डी का अनावरण करके आशीर्वाद दिया – *हिमालय पर जाकर, एक पाँव पर खड़े रह कर तपस्या करना या लंबी-लंबी पदयात्रा करके प्रभु के दर्शन करने से अधिक पाँच घंटे से ये प्रगट स्वरूपों के सान्निध्य में बैठ कर जो तपस्या की, उससे अनंत गुणा हमारा पुण्य कहा जाए...*

गुरुजी *ने जो बातें कीं, उसकी जुगाली करना। 1966 में विद्यानगर को कार्यक्षेत्र बनाने के लिए पप्पाजी बहनों के साथ पधारे। तब पप्पाजी पचास वर्ष के थे और गोल्डन ज्युबिली मनाने का समय व संजोग ही नहीं था। लेकिन,* ***व्रत लेकर बहनों ने 'गुणातीत ज्योत' में रहना शुरू किया, उससे बढ़ कर 'गोल्डन ज्युबिली' क्या कही जाए!*** *आज पचास वर्ष के बाद पप्पाजी का शताब्दी पर्व मना रहे हैं... जैसे कि* ***गुरुजी*** *ने कहा कि इन स्वरूपों के संकल्प से सब हरिभक्तों में संप, सुहृद्‌भाव, एकता का विकास हुआ है, सो* ***पप्पाजी-काकाजी का बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव सब इकट्ठे होकर मना रहे हैं, वह सच में हमारे समाज की आध्यात्मिक प्रगति कही जाए...***

पप्पाजी कहते कि स्त्री-पुरुष भाव से परे हो जाएं, तब महाराज के अतिरिक्त कुछ रहता ही नहीं। लेकिन, जो उस भाव में रहता हो, वही अन्य को उस भाव में ले जाकर आत्मा रूप वर्ता कर सुखी करता है। ***काकाजी-पप्पाजी गुणातीतभाव में रहते थे, तभी बहनों का कार्य हुआ।***

1966 में **बापा ने हमें** किसी बात का एहसास नहीं होने दिया और **काकाजी का जोग करवाया...** आणंद मंदिर में बापा से हम चालीस-पचास युवक बारी-बारी से मिलने गए। मैं जब मिलने गया तो बापा ने मुझसे कहा कि दादुभाई को बुला लो और फिर किसी को उन्हें बुलाने के लिए भेजा। इसी दौरान बापा ने मुझसे कहा कि दादुभाई आएं तो उनसे कहना कि विद्यानगर में जो युवकों की प्रवृति है, उसे आपके हाथ में ले लो। काकाजी आए तो बापा ने मेरा और काकाजी का हाथ आपस में मिलाते हुए कहा–

दादुभाई, आपको इन्हें अपने हाथ में लेना है और मुझसे कहा कि तुम्हें दादुभाई की आज्ञा में रहना है। बस, उसके बाद मैं बापा से कुछ पूछने गया ही नहीं। कुछ भी काम होता तो काकाजी से पूछ लेते... 1966 में छात्रालय छोड़ कर हम विद्यानगर किराए के मकान में रहने लगे। तब काकाजी ने कहा कि–

अब तुम पप्पाजी की आज्ञा में रहना, रोज़ उनका समागम करना और ज्योत में ही भोजन करना।

तब बा का जोग हुआ, उनके साथ प्रीति हुई और पप्पाजी ने सबका जतन किया... **बापा ने हमें कहा था कि तुम्हें इन्हीं कपड़ों में साधु बनाना है।**

बापा के उस संकल्प को काकाजी-पप्पाजी ने पकड़ कर पूरा किया

और

हम भाइयों को काकाजी-पप्पाजी और बा ने साधक की दीक्षा दी...

आज बहनों को अभिनंदन, धन्यवाद जितना कहें उतना कम है। क्योंकि काकाजी-पप्पाजी का रहस्य पचा कर ऐसा आध्यात्मिक जीवन जी रहीं हैं कि आज का समाज सहर्ष स्वीकार कर रहा है और कहता है : काकाजी-पप्पाजी ने जो कार्य किया था, वह वाक़ई अद्भुत, अद्भुत और अद्भुत है। यही सही अर्थ में शताब्दी मनाई कही जाए। शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना की बात से स्पष्ट किया कि ऐसे गुणातीत साधु से जुड़ कर भगवान के आश्रित हो जाएं, तो कल्याण के अधिकारी बनेंगे ही। **भगवान व उनके धारक संत के प्रति आत्मबुद्धि और प्रीति हो, तो जन्म-मरण का फेरा छूट जाए-मोक्ष हो जाए। लेकिन, उनकी आज्ञानुसार जीवन जिएँगे, तब देह के भाव से छूट कर 'गुणातीतभाव' प्राप्त करते हैं...**

काकाजी ने बापा और पप्पाजी का खूब माहात्म्यगान किया और महंतस्वामी जब विनु भगत के रूप में थे और हरिप्रसादस्वामिजी जब प्रभुदासभाई के रूप में बापा की सेवा में थे, तब से उनकी इतनी महिमा गाई है कि वे कितने बड़े-अद्भुत हैं। इससे यह भी **एहसास होता है कि काकाजी की दृष्टि कैसी होगी !**

आज सारी बोचासण संस्था प्रमुखस्वामी के बाद महंतस्वामी को 'गुणातीत स्वरूप' के रूप में स्वीकारने लगी है, जबकि **काकाजी ने** तो **1956 से महंतस्वामी के 'गुणातीत स्वरूप' होने की बात की...**

काकाजी-पप्पाजी की कैसी महानता! **जो स्वयं गुणातीत पुरुष हो, वही गुणातीत स्वरूप का दर्शन करवा सकता है।** उन्हें सब दिखाई देता है।

काकाजी-पप्पाजी एकत्र हुए तो यह 'गुणातीत समाज' का सर्जन हुआ। उन्होंने ही महंतस्वामी-हरिप्रसादस्वामी जैसे दिव्य पुरुषों की पहचान कराई... ***काकाजी-पप्पाजी प्रगट ही हैं, लेकिन उन्हें धारण किए संतों से जुड़ना अनिवार्य है। उनकी आज्ञानुसार जीवन जिएँ तो इंद्रिय-अंतःकरण के भाव प्रभुरूप बनेंगे,*** *वही हमारी सच्ची साधना है...*

संप, सुहृद्भाव, एकता *और मिलजुल कर कार्य करो, यह बापा का मूलभूत सिद्धांत-आदेश था।* ***काकाजी-पप्पाजी ने हम सब में वही प्रवर्तन कराया।*** *तो, मिलजुल कर-एक मन होकर भक्ति करें...* ***भगवान ने हमें एकत्रित किया है, तो उनका रूप होने के लिए मिलजुल कर कार्य करने के संजोग भी नियोजित किए हैं...*** *स्वामिजी के नेतृत्व में सारा समाज संप, सुहृद्भाव, एकता से जीकर भक्ति का परमानंद पाए। काकाजी-पप्पाजी हमारे लिए खूब परिश्रम करके गए हैं...* ***गुरुजी ने जैसे कि कहा कि – काकाजी स्थूल रूप से होते, तो कहते कि अब नौटंकी नहीं होती।***

सच में, बाय हार्ट-हृदय के भाव से सब गुणगान गाते हैं।

बस, ***अब इसे हम हमारे वर्तन में लाएँ–ऐसी विशेष कृपा करना।***

संत भगवंत साहेबजी द्वारा आशिष प्राप्ति के बाद **प.पू. गुरुजी** ने सभी को निम्न निमंत्रण देते हुए कहा –

...अभी साहेब ने अच्छी बात की। बापा ने हम सबको - जो नहीं आ सके उन सभी को भी एकत्र किया है। उन सभी से मुझे कहना है कि जैसा उत्सव हमने यहां मनाया, अमेरिका, पेरिस और मुंबई में मनाया, उसी प्रकार अगले साल ***2017 के 23 (शनि), 24 (रवि), 25 (क्रिसमस) दिसंबर*** *– छुट्टी के ये तीन दिन भी सभी को दिल्ली आ जाना है।*

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के वरद् हस्त शताब्दी निमित्त **'काकाजीनी परावाणी'** गुजराती पुस्तक का अनावरण हुआ और ध्वनिमुद्रण से **गुरुहरि काकाजी** ने आशीर्वाद दिया –

हम दोनों भाइयों की कृपा से आप लोग बहुत धन्य हुए हैं... मैं भी नेता और पप्पाजी भी नेता... दोनों स्वतंत्र पुरुष-मास्टर मेन। दो नेता की आपस में बनती नहीं है। दो शंकराचार्य भी एक साथ कार्य नहीं कर सकते। लेकिन, शास्त्रीजी महाराज और योगीबापा की खूब अनोखी कृपा कि सरदार पटेल और विट्ठलभाई की भाँति 'करमसद' में ये दो महान विभूतियाँ प्रगटीं। एक ही सिक्के के ये दो पहलू हैं। हम दोनों ने सर्वस्व होम दिया... हम दोनों भाइयों की पहले से एकता...

पप्पाजी को खूब धन्यवाद। वे बहुत चिकित्सक और मुझे बुलडोज़र चलाने की आदत। कैसा भी जीव हो उसे ठीकठाक करके पप्पाजी को संभालने के लिए देता... महिला मंडल की जिम्मा बापा ने दिया... बापा ने अपने प्रताप से हम दो भाइयों को निमित्त बनाया। हमारी एकता में से अद्वैतता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। पप्पाजी की एब्सॉल्यूट ऑनेस्टी, सिन्सियारीटी और लॉयल्टी। इसलिए हमारी खूब-जबरदस्त विजय है...

हमने बापा का बड़प्पन देखा है, इसलिए हमें महारथी होने का या रिद्धि-सिद्धि का प्रभाव नहीं पड़ता। *शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज हमारा पावरहाउस अखंड रख कर गए हैं। यदि पप्पाजी*

नहीं आए होते, तो मेरे ख्याल से बहनों का कार्य संभव ही नहीं था। मेरे अकेले हाथ से यह संभव ही नहीं था। हम महाराज के बैल हैं और संतों, युवकों, बहनों और गृहस्थों की नई क्रांतिकारी से थिंकिंग प्रोसेस बदल कर, प्रकृति पुरुष से परे के एक दिव्य समाज की स्थापना हो गई... ***हमारे यहाँ गुणातीत भावना का यह प्रकटभाव, एनर्जी, पावर अखंड रहेगा। पर, उसकी शर्त है–सुहृद्‌भाव!*** *तभी निर्दोषबुद्धि दृढ़ होगी। यह राजमार्ग सुहृद्‌भाव और निर्दोषबुद्धि का है। ऐसी ऑथेनटिक बात काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी के सिवा कोई नहीं कह सकता। यह तर्क से समझ नहीं आएगा, यह भावना का विषय है...* ***दो संकल्प करना कि बड़े पुरुष को विवश नहीं करना और संबंध वाले मुक्त के प्रति प्रभु मिलने का भाव रखना...*** *हमने भी संकल्प किया है–तुम डरना नहीं, विश्वास रखना। मेरा भाई मेरी ब्रेक है और मैं भी उनकी ब्रेक हूँ। ऐसी एकता से हम कार्य करना चाहते हैं। आप हमें सहकार देना।*

ध्वनिमुद्रण से ही **गुरुहरि पप्पाजी** की आशिष पाई –

ब्रह्मनियंत्रित-गुणातीत समाज की स्थापना करने का संकल्प महाराज और गुणातीत का था। शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज ने उस संकल्प की पुष्टि की। फलस्वरूप सारा गुणातीत समाज अस्तित्व में आया। गुणातीत समाज के हम सदस्य हैं। किसी न किसी भगवत्स्वरूप संत से आत्मबुद्धि और प्रीति से जुड़ कर उनके होकर जी रहे हैं। सो, ***हमारे लिए सारा कायदा बदल गया। हम पर भगवान की-गुणातीत की हुकूमत चलती है, जबकि जगत में कर्म की हुकूमत चलती है।*** *कर्म के अनुसार फल मिलता है... बापा के संकल्प से* ***आबाल-वृद्ध सभी ब्रह्मनियंत्रित हैं।***

महाराज के संकल्प से सभी चल रहे हैं। किसी की ताक़त नहीं कि स्वभावयुक्त वर्त सके... गुणातीतानंदस्वामी ने लिखा है कि लोक, भोग, देह और पक्ष बाधारूप बनते हैं। लेकिन, शास्त्रीजी महाराज की आज्ञा से जिन्होंने मंदिरों की सेवा की, निष्काम कर्मयोग से उनकी 'स्थिति' हो गई।

योगीजी महाराज ने संप, सुहृद्‌भाव और एकता का जबरदस्त उठाव लिया कि ब्रह्मनियंत्रित मान कर सत्संगी की सेवा कर लो। सभी को शास्त्रीजी महाराज का स्वरूप मान कर उन्होंने अपने जीवन से सिखाया... चित्त की अशुद्धि दो सौ वर्ष में महाराज ने निकाली... हम भाग्यशाली हैं कि किसने हमारा हाथ थामा है! किसी भी तरह ***'संबंध' ही देखें और यदि किसी का अभाव आए, तो टालने के लिए भजन करें...*** *अब हमें पूर्णाहुति करा ही लेनी है। योगी का ऋण अदा करना है... ऐसा बल महाराज सभी को दें।*

गुणातीत समाज के सिरछत्र **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** ने शताब्दी निमित्त **'पप्पाजीनी परावाणी'** गुजराती पुस्तक का उद्‌घाटन किया और **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने गुणातीत समाज के सभी मुक्तों को संबोधित करते हुए कहा–

जैसे कि गुरुजी ने अगले वर्ष दिसंबर में दिल्ली में बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव के लिए आमंत्रित किया है। इसी प्रकार, अंतिम चरण वर्ष 2018 की दिसंबर-सांकरदा में मनाना चाहते हैं और जैसे कि मुकुंदजीवनस्वामी ने कहा, तो हम सब इकट्‌ठे होकर वह उत्सव मनाएँगे। सारा गुणातीत समाज एकत्र होकर वह अंतिम चरण

मनाए और मुकुंदजीवनस्वामी ने आज जो (सर्वदेशीयता से जीवन जीने की) प्रार्थना की है वो हम सभी के जीवन में साकार हो, ऐसी काकाजी-पप्पाजी के चरणों में अरज करें...

अंतिम सत्र की पूर्णाहुति करते हुए **प.पू. स्वामिजी** ने आशिष वर्षा की–

'संप, सुहृद्भाव, एकता' – बापा का हमारे लिए जीवनमंत्र है। *गोंडल मंदिर में एक युवक ने गद्गद् हृदय से बापा से पूछा – आप संप, सुहृद्भाव, एकता की बहुत बातें करते हो, लेकिन अभी तो हमारा अंतर काम, क्रोध और लोभ से युक्त है। तब बापा ने हँसते हुए उत्तर दिया – जैसे-जैसे संप, सुहृद्भाव, एकता दृढ़ होगी, वैसे-वैसे काम, क्रोध, लोभ सभी विकार निकल जाएंगे। जैसे-जैसे आत्मीयता, सुहृद्भाव बढ़ेगा, वैसे-वैसे काम, क्रोध, हठ, मान, ईर्ष्या निकलते जाएंगे। यदि काम, क्रोध बाधारूप होता है, तो संप, सुहृद्भाव में कसर है। योगीजी महाराज ने स्वयं यह अर्थ लिखा है।* ***संप*** *यानि–एक-दूजे के प्रति या संत के प्रति मनुष्यभाव न हो। यदि* ***सुहृद्भाव सिद्ध हो जाए, तो निष्काम धर्म सिद्ध हो जाए।*** *हठ, मान, ईर्ष्या के राक्षस किसी भी संजोग में निकालने ही हैं...*

जीवन को प्रकाशमय बनाना हो, तो एक ही मार्ग है – शुभ विचार अखंड प्रवाहित हों। शुभ विचारों में ओत-प्रोत रहने से कभी दुःखी नहीं होंगे। यदि संप, सुहृद्भाव, एकता से वर्तने में निष्फल हुए, तो दुःखी रहना स्वाभाविक है। सुहृद्भाव की अंतिम अवस्था पर पहुँचने पर निष्काम धर्म सिद्ध होता है। ये तीन गुणों के अनुरूप जीवन जीने से दासत्व बढ़ेगा और मरज़ी के अनुसार वर्तन करने से बड़े पुरुष की दृष्टि में आ जाएंगे। हम सभी को ब्रह्मरूप होकर भजन करना है। किसी से कोई अपेक्षा नहीं रखना। जब तक अपेक्षा रहेगी, तब तक बोलने, विचारने का मन होगा। यदि अपेक्षा कम होगी, तो हठ, मान, ईर्ष्या कम होगी। जब तक 'वाणी अमृत से भरी शहद सी, संजीवनी सृष्टि की...' इस श्लोक की प्रथम पंक्ति सिद्ध नहीं होती, तब तक निष्काम धर्म सिद्ध नहीं होगा। निष्काम धर्म सिद्ध होने के बाद सुहृद्भाव प्रगटता है। तत्पश्चात् अखंड आनंद की भूमिका प्राप्त होती है और निर्दोषबुद्धि, निष्ठा दृढ़ होने पर आत्मा-परमात्मा का ज्ञान होता है...

बड़े पुरुषों को कोई स्वार्थ नहीं है। उन्हें एक ही स्वार्थ कि सरल बनो। तुम्हारे गुरु के समक्ष सरलता से वर्तना। संत के वचन से जीने का दृढ़ संकल्प कर लेना। इंद्रिय, अंतःकरण का विवेक जब तक सिद्ध न हो, तब तक दोष जाते नहीं। ***हम साधक हैं। हमें किसी से नाराज़ होने का अधिकार नहीं।*** *सत्संग यानि विवेक-मिठास का स्रोत। मैं टोटल ज़ीरो हूँ। हमें यदि सुखी होना हो, तो ऐसी भावना से जीवन जीना।*

घर से सत्संग की शुरुआत करो। यदि घर में निष्फल नहीं होओगे, तो ब्रह्मांड में कहीं भी नहीं होओगे। संप, सुहृद्भाव और एकता से जीकर बापा की प्रसन्नता प्राप्त करें- यही प्रार्थना!

आज प.पू. स्वामिजी अत्यंत आनंदित होकर, मानो अपने अंतर से सब कुछ लुटाने के लिए करीब दो बजे तक आशीर्वाद बरसाते रहे। पर, उसी दिन अचानक ट्रांस्पोर्ट की हड़ताल होने की खबर मिली। सो, मुक्तों को घर लौटने की असुविधा के कारण पू. विठ्ठल फुआ ने सहजता से प.पू. स्वामिजी को प्रार्थना की और... 'काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' की जयघोष से समापन हुआ।

❀❀❀

आत्मीय मुक्तात्मा की विदाई द्वारा 'प्रगट प्रभु' की करुणा का दर्शन कराती मसूरी शिविर

2012–गुरुहरि काकाजी के साक्षात्कार की हीरक जयंती एवं प.पू. गुरुजी के 75वें प्राकट्य के वर्ष की दिव्य स्मृति में प.पू. गुरुजी **'आनंदोब्रह्म शिविर'** के लिए कुछ मुक्तों को मसूरी ले गए थे और पू. प्रमीतभाई संघवी के संपर्क से 'रॉयल ऑचिर्ड फॉर्ट रिसोर्ट' में पहली बार ठहरे थे। पूर्व के बलिष्ठ संस्कार कहे जाएं कि रिसोर्ट के मालिक पू. गर्ग साहेब, उनके सुपुत्र पू. गौरवजी सपरिवार प.पू. गुरुजी व दिल्ली मंदिर के साथ खूब अपनेपन से जुड़ कर प.पू. गुरुजी का अभिन्न अंग बन गए! और... इसी अपनेपन और प्रेम वश ही पू. गौरव भईया और धर्मपत्नी पू. सुचिका भाभी 2016 के अगस्त महीने से प.पू. गुरुजी को मसूरी आने के लिए आग्रह कर रहे थे। आख़िर प.पू. गुरुजी ने **25 से 29 नवंबर 2016**–पाँच दिन की **'आनंदोब्रह्म शिविर'** निश्चित की। सो, विद्यानगर-पप्पाजी तीर्थ पर आयोजित, 'गुरुहरि काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' से लौटने के बाद तुरंत ही मसूरी शिविर की तैयारियाँ होने लगीं।

और... 24 नवंबर की सुबह निकल कर, 12 मुक्त पूर्व तैयारियों के लिए मसूरी गए। 25 की सुबह 8:30 बजे दिल्ली, यू.पी., हरियाणा के करीब 80 मुक्त गाड़ियों द्वारा मसूरी के लिए रवाना हो रहे थे कि प.पू. गुरुजी अपने कमरे की बालकनी में दर्शन देने के लिए आए और धुन करवा कर कहा–

कई लोग पहली बार मसूरी जा रहे हैं। सो, मैं उनके साथ हर जगह देखने के लिए आऊँगा। यहां से देहरादून के रास्ते में सभी बीस मिनिट और देहरादून से मसूरी तक के रास्ते में बीस मिनिट धुन जरूर करना।

सायं 6:00 बजे सभी मसूरी के रिसोर्ट में पहुँचे। इसी दिन प.पू. गुरुजी के साथ पू. सुहृद्स्वामी, पू. अभिषेक, प.पू. दीदी-कुछ बहनें, पू. गर्ग साहेब एवं परिवार तथा अमदावाद, मुंबई से दिल्ली पहुँचे करीब 50 मुक्त शाम की फ्लाईट से देहरादून पहुँच कर रात्रि को 8:30 बजे रिसोर्ट पहुँचे। मुंबई, जामनगर, रुद्रपुर और मोगा के सत्संगी परिवार भी सीधा मसूरी पहुँच गए थे। यूँ, अपने 'प्रगट प्रभु' की निश्रा प्राप्त करने हेतु, अलग-अलग जगह से करीब 150 मुक्त 'ब्रह्मकल्लोल' करने के लिए एकत्रित हुए।

26 की सुबह नाश्ते के बाद प.पू. गुरुजी सभी को ट्रॉली से 'गनहिल' ले गए। वहां धुन–भजन करके चॉकलेट का प्रसाद वितरित करवाया। रिसोर्ट में लौट कर दोपहर का भोजन लिया। सायं 6:00 बजे आरती के बाद सत्संग सभा हुई। दिल्ली के पू. जयप्रकाश प्रजापतिजी, गुजरात-जामनगर के पू. जीतूभाई पटेल, पू. गौरव गर्गजी एवं पू. गर्ग साहेब ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। तत्पश्चात् 'अस्खलित मंगल कृपाधारा' पुस्तक में से गुरुहरि काकाजी का प्रसंग **'स्व अर्पण-वही समर्पण'** पढ़ाने से पहले प.पू. गुरुजी ने मर्म समझाया–

...मैंने सभी की बातें खूब ध्यान से सुनीं। सबका सुर एक ही था कि उनकी बिगड़ी बन गई या नहीं बनती थी वो बन गई! ये तो बहुत कॉमन चीज़ें हैं। मसूरी शिविर में काकाजी के प्रसंग पढ़ेंगे, ताकि ख्याल पड़े, जैसे गौरव ने बताया कि हमें ध्यान रहे कि हम कौन-से इन्स्टीट्यूशन-क्लास में हैं। और... जब हम ***'ब्रह्मविद्या***

__की कॉलेज'__ में आ गए हैं, तो कोर्स या सिलेबस तो एक ही रहेगा। युग के ढंग बदलते रहेंगे, पर मक़सद वही रहेगा... गुणातीतानंदस्वामी ने अपनी बातों में लिखा है – सभी को गुणातीत करना है... उसमें हमारा नंबर भी आ गया... 1954-55 की बात है, जब हम नए-नए सत्संग में आए, तो __काकाजी__ के मुख से कई बार सुना कि __ताड़देव जीवों को ब्रह्मरूप करने की फॅक्टरी है...__ सुन कर बहुत अच्छा लगता। पर, अब ख्याल पड़ता है कि एट्लस या हीरो जैसी फॅक्टरी में कोई एक-दो या तीन-चार साइकिल नहीं बनती। जितना रॉ मटिरियल होता है, वह सारे की साइकिल बनती है। वैसे ही हम सब रॉ लॉट में हैं। अब हम इस रास्ते मरज़ी से चलें या न चलें, पर वे हमें ब्रह्मरूप करके ही छोड़ेंगे। हमें ब्रह्मरूप होना हो या नहीं, तब भी वे छोड़ेंगे नहीं। बापा अकसर दृष्टांत देते थे कि एक मियां ने जामुन लिए। उसमें एक भौंरा भी आ गया। मियां के हाथ में जैसे ही भौंरा आया तो वो फड़फड़ाया। मियां ने तुरंत ही कहा कि कुछ भी हो जाए, तुझे मैंने तोल में लिया है और यूं कह कर उसने चबा ही लिया। इसी तरह हमें भी पसंद आए या न आए, कठिनाई या कुछ भी लगे, हम छूटने वाले नहीं हैं। छूटना भी चाहेंगे तो भी महाराज छोड़ने वाले नहीं हैं। पर, अलग-अलग प्रसंग पर हमें किस समझदारी से गुज़रना है, उसकी हमें प्रेरणा मिले इसलिए काकाजी के ये प्रसंग पढ़ने हैं। हम बड़ी शान से कहते हैं कि हम काकाजी के हैं। पर, काकाजी के हैं उसका मतलब क्या ? हमें काकाजी की ख़ानदानी बनाए रखनी पड़ेगी, तब महाराज खुश होंगे या हमारा रास्ता आसान रहेगा।

सभा के बाद रात का भोजन करके करीब 12:00 बजे तक प.पू. गुरुजी मुक्तों को आनंद करवाने के लिए बैठे रहे... सत्संग में शायद ही कोई मुक्त होगा, जो अटूट सेवा की मिसाल हमारे पुराने जोगी पू. नवीनभाई शाह, उनके सुपुत्र आशिष और अब उनके पौत्र पू. नक्षु से परिचित नहीं। पू. नवीनभाई की पत्नी पू. धीरज भाभी की तबियत वहीं पर खराब हो रही थी। सो, उनकी तबियत हेतु प.पू. गुरुजी ने पंद्रह मिनिट धुन भी करवाई।

पू. गर्ग साहेब रिसोर्ट के बगल में नया निर्माण करवाने की शुरुआत करने के लिए महापूजा करवाना चाहते थे। ताकि कन्स्ट्रक्शन की जगह पर प्रासादिक जल व पुष्प अर्पित करके शुभारंभ हो। अतः **27** की सुबह नाश्ते के बाद, प.पू. गुरुजी की निश्रा में रिसोर्ट के कॉन्फरन्स हॉल में महापूजा हुई। प्रासादिक जल व पुष्पवृष्टि के बाद प.पू. गुरुजी सभी को 'कंपनी बाग' ले गए। वहां बोटिंग इत्यादि से मुक्तों को आनंद कराया। लेकिन, पू. धीरजभाभी की नासाज़ तबियत को देखते हुए, सभी का ध्यान उन्हीं की ओर रहा।

एक तरफ यह सोच थी कि उन्हें परिवार के साथ दिल्ली भेज दिया जाए। पर, दूसरी ओर प.पू. गुरुजी बार-बार यही कहते रहे – *यदि रास्ते में कुछ हो गया तो ?* रिसोर्ट लौट कर सभी ने दोपहर का भोजन किया और... सायं 5:00 बजे तो पू. धीरज भाभी ने प.पू. दीदी की गोद और अक्षरज्योति की बहनों की हाज़िरी में अंतिम श्वास लेकर विदाई ली !

प.पू. गुरुजी आराम करके बाहर आए ही थे कि उन्हें यह समाचार दिया गया। हाँलाकि साथ में गईं अमदावाद की पू. डॉ. सीमा बहन और पू. डॉ. अर्ची के समक्ष ही उन्होंने प्राण त्याग किया था, लेकिन फिर

भी कन्फर्म कराने के लिए मसूरी के लोकल डॉक्टर को बुलाया गया और उन्होंने फाईनली मृत घोषित किया।

पू. धीरजभाभी के प्यारे पोते **पू. नक्षु** को प.पू. गुरुजी ने जब यह बताया, तो सहज ही वह ज़ोर से रोने लगा। पर, प.पू. गुरुजी ने अपनी गोद में बिठा कर समझाया, तो तुरंत ही संभलते हुए बोला–

चलो, अच्छा हुआ; उन्हें बहुत तकलीफ होती थी।

पू. आशिष दिल्ली–'अक्षरज्योति' में चल रहे निर्माण कार्य के कारण अबकी बार शिविर में नहीं आया था; प.पू. गुरुजी फोन करके बुलाते भी रहते थे। पर, चल रहे कन्स्ट्रकशन की वजह से वह मना करता रहता था।

और... शाम को करीब छः बजे प.पू. गुरुजी ने दिल्ली मंदिर में ठहरे पू. जयप्रकाशजी को जब इस घटना की खबर दी और पू. आशिष को भेजने के लिए कहा, तब उन्होंने बताया–

गुरुजी, आपको सरप्राईज़ देने के लिए शाम 4:00 बजे ही मिलनभाई, प्रीति ठक्कर, धारु और पुण्यम् के साथ आशिष मसूरी के लिए रवाना हो ही गया है।

जैसे कि कहा जाता है कि बच्चे के साथ माँ अंतर से जुड़ी होती ही है; सो पू. धीरजभाभी जब जीवन की अंतिम सांसें ले रही थीं, सो उसी दौरान उन्होंने आशिष को बुला ही लिया! पू. आशिष ड्राईविंग करते हुए कहीं डिस्टर्ब न हो, इसलिए प.पू. गुरुजी ने उसे यह खबर देने के लिए सभी को मना कर दिया।

ऐसी घटना बनने के बावजूद, प.पू. दीदी के कहने पर **पू. नवीनभाई** ने सहजभाव से करीब आधा घंटा प्रसंग बताए कि किस प्रकार वे गुरुहरि काकाजी और प.पू. गुरुजी के संपर्क में आए और अंत में यही बोले– ***मेरा तो सर्वस्व गुरुजी और यह सत्संग समाज है।***

रात को ग्यारह बजे घटना से अनजान पू. आशिष सीधा प.पू. गुरुजी से मिला। जैसे ही प.पू. गुरुजी ने यह समाचार दिया, तो सहज स्थैर्य से पू. आशिष ने कहा–*अच्छा, बहुत बड़ा काम हो गया।*

पू. आशिष की स्थिरता देखकर सभी स्तब्ध थे। यहां तक कि पू. गौरव गर्गजी तो रो पड़े। यूं, पू. नवीनभाई और पू. आशिष ने वच. मध्य 17 के अनुसार **'अपनी स्थितप्रज्ञता'** से **'स्वरूप के प्रति की स्थितप्रज्ञता'** का दर्शन कराया।

दरअसल, पिछले आठ-दस साल से पू. धीरजभाभी बहुत बीमार रहती थीं। दैनिक कार्य करने में भी उन्हें सहारे की जरूरत पड़ती थी। इसीलिए वे बार-बार प.पू. गुरुजी से प्रार्थना करते हुए कहलवातीं–

अब मुझसे इस हालत में नहीं रहा जाता, मुझे जल्दी धाम में ले जाओ।

यह सुन कर **प.पू. गुरुजी** भी उन्हें सांत्वना देते हुए कहलवाते–

महाराज जल्दी ही उपायभूत होंगे और तुम्हें तनिक भी तकलीफ नहीं होगी।

और... जैसे कि सत्संग में कहा जाता है कि मक्खन में से हम बाल निकाल लेते हैं, यूं श्रीजी महाराज–गुरुहरि काकाजी ने पू. धीरजभाभी की देह में से आत्मा को खींच लिया।

दृढ़ जैन कुटुंब के पू. नवीनभाई एवं पू. धीरज भाभी करीब 1974 में प.पू. गुरुजी के संपर्क में आए और परिवारसहित गुरुहरि काकाजी के प्रति अटूट निष्ठा से वे जुड़ गए। फलस्वरूप गुरुहरि काकाजी ने स्वयं उनकी बड़ी सुपुत्री पू. नम्रता बहन का विवाह **पू. हरिवदनभाई दोशी** से करवाया, जो सत्संग के अभिन्न अंग बने। व्यवसाय में व्यस्त होने के कारण पू. हरिवदनभाई ऐसी शिविर इत्यादि में साथ चलते नहीं, पर प्रभु की ही योजना थी; अतः प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी के एक बार कहने पर वे भी शिविर में आए थे। सो, अंत्येष्ठि में पूरा परिवार हाज़िर था। अन्य दो सुपुत्रियाँ पू. स्वाति दीदी एवं पू. दृष्टि प.पू. गुरुजी की सेरेछाया और प.पू. दीदी की निश्रा में भगवान भजते हुए सत्संग की सेवा में रहती हैं। गुरुहरि काकाजी के आशीर्वाद से प्राप्त सुपुत्र पू. आशिष भी अपनी पत्नी पू. धुन के संग, प.पू. गुरुजी की आँख के इशारे पर सेवा करते हुए दिन-रात निमग्न है। **पू. धुन** ने तो विवाहोपरांत लगभग दस वर्ष तक दिन-रात पू. धीरज भाभी की **जिस प्रकार सेवा की, उसके लिए सभी का हृदय नतमस्तक हो जाता है।**

सच तो यह है कि इस कुटुंब ने प.पू. गुरुजी और मंदिर के मुक्तों को ही अपना परिवार माना। सो, प.पू. गुरुजी, प.पू. दीदी और मंदिर स्टाफ के कहीं बाहर जाने पर पू. धीरज भाभी के मन में बैचेनी हो जाती। सो, वे कई बार आग्रहपूर्वक भी साथ चलने के लिए कहतीं। अबकी बार की शिविर के समय भी ऐसा ही हुआ। उन्हें जैसे ही पता चला कि सभी मसूरी जा रहे हैं। तो, उन्होंने तुरंत ही अपनी टिकिट बुक कराने की बात की।
दूसरी बात–जैसे कि भजन की एक पंक्ति है–

धाम, धामी, मुक्तोनी साथे, जीवन जीववानुं सौभाग्य जेने मळयुं,
हसतां-रमतां जगत खर्युं... जी खर्युं....

वाक़ई, जगत के संबंधों को तिलांजली देकर, सत्संगिओं को अपने सच्चे सगे मानते हुए, उनके मन में ऐसी भावना थी कि मेरी मृत्यु के समय अमदावाद, मुंबई इत्यादि के भी सभी भक्त आस-पास हों, ताकि मेरे लिए किसी को भागदौड़ न करनी पड़े। इस प्रकार, प.पू. गुरुजी जैसी प्रभुधारक विभूति के दिव्य सान्निध्य, प.पू. दीदी जैसी दिव्य माँ की गोद और अलग-अलग जगह से आए निष्ठावान मुक्तों की हाज़िरी में सहजता से अक्षरनिवासी होकर **पू. धीरजभाभी** ने तो भजन की निम्न पंक्ति सार्थक की–

श्री गंगाजी का तट हो, यमुना का वंशीवट हो,
मेरा सांवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकलें...

उनके मुखारविंद पर सौम्यता छाई थी। सच, पू. धीरजभाभी का संकल्प कितना प्यॉर और बलवान कहा जाए!

गुरुहरि काकाजी के समय के मुंबई के पुराने जोगी **मनसुखभाई,** जिनकी जीप द्वारा गुरुहरि काकाजी का पार्थिव शरीर मुंबई से गुजरात-ब्रह्मज्योति आया था, वे अपने परिवार के साथ कई साल से हरिद्वार में रहते हैं। सो, प.पू. गुरुजी ने उनसे फोन पर बातचीत करके अंत्येष्टि की तैयारी करने के लिए कहा।

28 की सुबह 'स्वामिनारायण' धुन की गूंज के दिव्य वातावरण में उपस्थित अक्षरज्योति की सभी बहनों,

हरिभक्तों-भाभियों ने पू. धीरजभाभी का पूजन करके हार व शाल अर्पण किया। पू. धीरजभाभी ने सत्संग के जिन बच्चों को अपना बेटा माना, उन्हीं के कंधों पर रिसोर्ट से विदाई लेकर एम्बयूलन्स द्वारा अंतिम यात्रा के लिए प्रस्थान किया। साथ में तीन गाड़ियों द्वारा पू. नवीनभाई एवं पू. आशिष के साथ कुछ हरिभक्त भी गए। दोपहर 12:30 के करीब हरिद्वार के 'खड़खड़ी घाट' पर पहुँचे। पू. मनसुखभाई वहीं मौजूद थे। हरिभक्तों ने अंत्येष्टि की सामग्री एकत्रित की और 'स्वामिनारायण' धुन करते हुए **पू. आशिष एवं पू. अभिषेक** ने मिलकर मुखाग्नि दी। सर्व क्रिया पूर्ण होने के बाद, उनकी अस्थियों को तभी एकत्र करके वहीं गंगाजी में विसर्जित करके सभी सायं 7:00 बजे मसूरी लौटे।

आरती के बाद प.पू. गुरुजी की निश्रा में सभा हुई। यू.पी.-ईटेड़ा के पू. भीम यादवजी, दिल्ली के पू. पवन अग्रवालजी, पू. दीपक सेठजी तथा पू. राजेश अग्रवालजी ने अपने अनुभवों का लाभ दिया। 'अस्खलित मंगल कृपाधारा' पुस्तक में से गुरुहरि काकाजी का प्रसंग **'मान-अपमान में एकता'** पढ़वाने से पूर्व प.पू. गुरुजी ने सूचन किया –

...शिविर एक क़वायत है। अपने यहाँ सत्संग ऐसा नहीं कि सत्संग में जाओ, बस कोई महात्माजी बातें करते हों। बातें तो होनी ही चाहिएं, लेकिन उन बातों को जीवन में कैसे ढालना, उसकी क़वायत ऐसी शिविरों से मिलती है-देखने को मिलती है। साथ ही समझ आता है कि हमें कैसा जीना चाहिए। काकाजी का सारा जीवन देखें, तो 'सत्संग' प्रॅक्टीकली उनके जीवन में बुन गया... काकाजी के ये जो प्रसंग पढ़ते हैं, वैसे ही हमारे जीवन में भी बनते होंगे और यदि नहीं बने होंगे तो बनेंगे भी। पर, हमें किस दिशा में जाना है, इससे हमें मार्गदर्शन मिलता है...

अंत में–पू. गर्ग साहेब ने आभार प्रकट किया और पू. वच्छराजजी ने शिविर की पूर्णाहुति की प्रार्थना की।

अगले दिन **29** की सुबह नाश्ता करने के बाद, दिल्ली जाने के लिए सभी ने गुरुहरि काकाजी के प्रासादिक स्थल **'सहस्त्रधारा'** के लिए प्रस्थान किया। वहां प.पू. गुरुजी ने सभी मुक्तों के माथे पर प्रसादी का जल डाल कर स्मृति दी।

वहां से पू. गौरव गर्गजी द्वारा आयोजित 'गढ़वाली रेस्तरां' में दोपहर का भोजन करके, प.पू. गुरुजी के साथ फ्लाईट से दिल्ली जाने वाले मुक्त एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए और अन्य सभी गाड़ियों द्वारा दिल्ली के लिए निकले।

दिल्ली लौटने के बाद 1 दिसंबर की सायं मंदिर के 'कल्पवृक्ष हॉल' पू. धीरजभाभी की श्रद्धांजलि सभा हुई और... जैसे कि उनका संपूर्ण जीवन 'गुणातीत समाज' के ईर्दगिर्द ही बीता। तो, संजोग से 10 दिसंबर – **उनकी त्रयोदशी की महापूजा के समय गुरुहरि काकाजी के लाड़ले प.पू. वशीभाई एवं पू. अश्विनभाई भी दिल्ली मंदिर में मौजूद थे।** यूं, धन्य है पू. धीरजभाभी की भक्ति कि उनके अंतर की सभी मंशाएँ गुरुहरि काकाजी-प.पू. गुरुजी ने पूर्ण कीं!!

❁❁❁

प.पू. गुरुजी के संग युवाओं ने किया मुंबई - वडोदरा का अथक - अविस्मरणीय पर्यटन या यात्रा !

दिल्ली मंदिर के आत्मीय स्वजन अक्षरनिवासी पू. निरंजनभाई दवे के मुंबई निवासी दामाद पू. **डॉ. राजनभाई अध्वर्यु** कैंसर से पीड़ित थे। अपनी नाज़ुक हालत में वे प.पू. गुरुजी का दर्शन करने के लिए दिल्ली - मंदिर आना चाहते थे। सो, प.पू. गुरुजी ने सोचा कि मैं खुद ही एक बार उनसे मिल जाऊं। दूसरी ओर, किडनी की तकलीफ के कारण पू. कोठारीस्वामिजी की तबियत भी ज़्यादा अच्छी नहीं रहती है, तो उनका भी दर्शन करने की प.पू. गुरुजी की तीव्र चाहना थी। इससे भी अधिक, क्रिसमस के दिन - 25 दिसंबर को प.पू. स्वामिजी के दर्शन पाने भी वे लालायित थे। और... 24 दिसंबर को मुंबई निवासी **पू. अनिलभाई माणेक (शेठ)** के अनुज पू. अश्विनभाई के सुपुत्र का शुभविवाह था। प.पू. गुरुजी को आने के लिए वे खूब आग्रह कर रहे थे। अतः **23 दिसंबर से 26 दिसंबर** प.पू. गुरुजी ने **मुंबई** व **वडोदरा** का कार्यक्रम बनाया।

शुरुआत में तो प.पू. गुरुजी एवं पाँच-छः मुक्त ही जाने वाले थे। लेकिन, जैसे ही पता चला कि मुंबई में गुरुवर्य योगीजी महाराज, गुरुहरि काकाजी के प्रासादिक स्थल एवं प.पू. गुरुजी का पूर्वाश्रम का घर, स्कूल व कॉलेज इत्यादि का दर्शन करने के लिए वे मुक्त जाने वाले हैं। तो, एक-एक करके आख़िर दिन तक दिल्ली - हरियाणा - यू.पी.-उत्तराखंड एवं अमदावाद से कुल मिला कर पैंतीस यंग्स्टर्स प.पू. गुरुजी की निश्रा में, दिव्य स्मृतियाँ प्राप्त करने की भावना से, उसी फ्लाईट्स में साथ जाने - आने के लिए तैयार हो गए और सभी को फ्लाईट्स की टिकिटें भी कन्सेशनल फॅयर्स में मिलती गईं !

मुंबई के **पू. ओ.पी. अग्रवालजी एवं उनके सुपुत्र पू. दीपक** ने तो प्रासादिक स्थलों की एक ब्रॉशर तक तैयार करवाई। दिल्ली में पू. आशिष एवं पू. लक्ष्मी शुक्ला **23 दिसंबर** की मध्यरात्रि के पश्चात् ढाई बजे इसे प्रिन्ट करवा कर लाए और... सुबह एयरपोर्ट जाने से पहले प.पू. गुरुजी ने अपने हाथों से सभी को दी। एयरपोर्ट पर पू. गिरीश गुप्ताजी एवं उनकी पत्नी पू. रेणू भाभी सभी के लिए सैंडविच देने के लिए आईं। सुबह 10:45 की फ्लाईट से दिल्ली से मुंबई के लिए रवाना हुए।

दोपहर करीब एक बजे मुंबई एयरपोर्ट पहुँचे, जहां प.पू. भरतभाई एवं पू. राजुभाई ठक्कर रीसीव करने आए थे। वहां से सीधा अंधेरी जाकर पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर दोपहर का प्रसाद लिया। थोड़ी देर विश्राम करने के बाद सायं सभी पू. डॉ. राजनभाई के घर जाने के लिए निकले व रास्ते में आते कुछ जाने-माने स्थल देखते हुए पू. डॉ. राजनभाई के घर पहुँचे। जैसे कि पू. डॉ. राजनभाई की हालत अत्यंत नाज़ुक थी, सो प.पू. गुरुजी ने वहां धुन - भजन करा कर मानो परिवारजनों को खूब बल प्रदान किया। और... पू. डॉ. राजनभाई भी उस समय खूब फ्रेश एन्ड फाईन रहे व सभी को खूब उमंग से गोलगप्पे, भेलपुरी, चाट-पकौड़ी वगैरह खिलाया।

7 जनवरी 2017 की सुबह तीन बजे तो गुरुहरि काकाजी पू. डॉ. राजनभाई को 'अक्षरधाम' ले गए ! और... प्रगट प्रभु के बल से तनिक भी विचलित न होकर; लोक की परवाह किए बिना, पू. डॉ. राजनभाई की पत्नी **पू. स्वीटी** दीदी (नंदिनी) उनकी अस्थियाँ लेकर, प.पू. दीदी के प्राकट्य दिन निमित्त 12 जनवरी को दिल्ली मंदिर आईं और समाधिस्थान 'अक्षरतीर्थ' पर अस्थि विसर्जन की सारी विधि संपन्न की।

यह सत्य है कि **ऐसा बल, भगवान और सच्चे संत के संबंध से ही जीव को मिलता है। निष्ठावान - बलिष्ठ पू. स्वीटी दीदी की स्थिरता एवं अडिग निष्ठा देख कर सभी के दिल नतमस्तक हो गए** और अंतर से प्रार्थना हुई कि उनकी भाँति हम भी भगवान और संत से अनन्यभाव का संबंध दृढ़ करके, लोक-व्यवहार के बंधन से ऊपर उठ कर जीवन धन्य करें...

पू. डॉ. राजनभाई के घर से रवाना होकर, नरीमान पॉईन्ट पर थोड़ी देर ठहरे – जब बच्चों व यंग्स्टर्स ने बग्गी में सैर की और अंधेरे में चमकता 'मुंबई नॅकलेस' देख कर मरीन ड्राईव होते हुए, घाटकोपर **पू. मनीषभाई** की दुकान पर बर्फ का गोला खाकर , देर रात को डेढ़ बजे **पू. अनिलभाई माणेक (शेठ)** के घर गए और वहीं ठहरे। पू. अनिलभाई ने अपने फ्लॅट एवं ऊपर के फायर फ्लॉर की खाली जगह पर सभी के सोने की व्यवस्था की थी। करीब 40-45 जनों के लिए तो वो जगह भी कम ही पड़नी थी। लेकिन, सभी ने देखा है कि प.पू. गुरुजी हमेशा अपने आपको हर प्रकार से एड्जस्ट कर लेते हैं, सो जिसे जहाँ जगह मिली, यहाँ तक कि रसोई में भी पाँच जने सो गए।

अगले दिन **24** की सुबह बाथरूम्स की समस्या हुई ! पर, वहां बिल्कुल बगल में ही स्विमिंग पुल था। सो, प.पू. गुरुजी ने युवकों को वहाँ जाकर स्विमिंग करके नहा-धोकर फ्रेश हो आने के लिए कहा। सभी यंग्स्टर्स को तो तीनों दिन के लिए आनंद करने का मौका मिल गया; सो प.पू. गुरुजी द्वारा मिली अनोखी स्मृति करते हुए खूब मज़ा किया। नाश्ता करने के बाद तुरंत 'सुंदराबाई हॉल '– जहां प.पू. गुरुजी ने प.पू. योगीबापा और प.पू. काकाजी के प्रथम दर्शन किये थे, ऐसे अन्य प्रासादिक स्थलों का दर्शन करने के लिए प.पू. गुरुजी के साथ सभी निकल गए।

पू. शोभना भाभी की बहन **पू. दीप्तिभाभी** एवं उनके पति **पू. डॉ. कॅयुर अध्वर्यु** ने **पू. डॉली दीदी** से मिल कर प्रासादिक स्थल दिखाने का सारा रूट बनाया था; सो सभी को गाईड करने के लिए स्कूटर पर वे दोनों आगे चलते।

'गॅट वॅ ऑफ इन्डिया' पर प.पू. योगीबापा की स्मृति कराने हेतु, इन्होंने स्टीम लॉंच में सभी को समुद्र में सैर तक कराई...!

प.पू. गुरुजी के पूर्वाश्रम के घर पर अब एक मुस्लिम परिवार रहता है। वह खूब संस्कारी कहा जाए कि पू. दीप्तिभाभी के बात करने पर उन्होंने 30-40 मुक्तों को अपने घर में आने की इज़ाज़त दी। मुंबई का यह ट्रिप सभी युवाओं के लिए बेहद यादगार बना, क्योंकि प.पू. गुरुजी ने जिन स्कूलों, कॉलेजों में पढ़ाई की या मंदिरों में दर्शन करने जाते या जिन दुकानों से खरीददारी करते या जिन थिएटर्स में पिक्चर देखने गए, जहाँ सर्विस करते – उन सभी स्थानों का दर्शन किया।

और... जैसे कि स्वरूपों के मुख से सुना है कि साधु की हर एक क्रिया चैतन्यलक्षी होती है; इस तथ्य का भी दर्शन हुआ। प.पू. गुरुजी ने **'चिल्ड्रन्स एकॅडमी स्कूल'** से आठ साल शिक्षा प्राप्त की थी। सभी को ख्याल था ही कि स्कूल तो लंबे अरसे से बंद हो गया है, पर वह स्थल तो देखें; यूं वहाँ गए तो पता चला कि उस स्कूल की जगह पर अब नई रेसीडन्स बिल्डिंग बन गई है। अचरज की बात थी कि उस बिल्डिंग के नए मालिक **श्री मूलचंदजी** को प.पू. गुरुजी के प्रति खूब भाव उत्पन्न हुआ और वे प.पू. गुरुजी को आग्रहपूर्वक घर में ले गए, आदर-सत्कार

किया। प.पू. गुरुजी ने वहाँ धुन कराई और श्री मूलचंदजी को दिल्ली मंदिर आने के लिए आंमत्रित भी किया। सच, उनके ज़रूर पूर्व के संस्कार होंगे कि प.पू. गुरुजी वहाँ गए और पहली बार में ही ऐसा अपनापन हो गया!

सारा दिन प्रासादिक स्थलों का दर्शन करने के बाद, सायं पू. अश्विनीभाई माणेक के सुपुत्र को शुभविवाह का आशीर्वाद देने प.पू. गुरुजी थोड़ी देर के लिए वहां गए और पू. पवित्रम् के सॅन्डवीचीज़ एवं दोबारा पू. मनीषभाई के यहाँ गोला खाकर, देर रात को पू. अनिलभाई के घर लौटे।

25 – क्रिसमस, घाटकोपर से सुबह जल्दी ही निकल कर सभी पवई मंदिर दर्शन करने के लिए गए। वहां नाश्ते के बाद, प.पू. गुरुजी के साथ के चार-पाँच मुक्तों के अलावा अन्य सभी प्रासादिक स्थलों का दर्शन करते हुए दोपहर को ताड़देव मंदिर गए। वहां हॉल एवं गुरुहरि काकाजी के कमरे में धुन-भजन करके थाल-प्रसाद लेने के बाद भोंयवाड़ा का 'स्वामिनारायण मंदिर', प.पू. योगीबापा की प्रासादिक 'कपोळवाडी' जैसे प्रासादिक स्थलों एवं आख़िरकार हमारे दादर मंदिर में दर्शन करते हुए एयरपोर्ट पहुँचे। प.पू. गुरुजी भी एयरपोर्ट पहुँच चुके थे।

सायं 7:20 की फ्लाईट से **'हरिधाम'** के लिए रवाना होकर करीब साढ़े आठ बजे वडोदरा पहुँचे। एयरपोर्ट पर **पू. दासस्वामिजी** रीसीव करने के लिए आए थे। अमदावाद से पू. परिमलभाई इत्यादि प.पू. गुरुजी एवं मुक्तों के लिए छः गाड़ियाँ लेकर आए थे। एयरपोर्ट से सीधा हरिधाम पहुँच कर प.पू. गुरुजी, **पू. कोठारीस्वामिजी** से मिलने उनके कक्ष में गए। प्रसाद लेने के बाद **प.पू. स्वामिजी** के निवासस्थान पर उनका दर्शन करने गए। **प.पू. गुरुजी** ने प.पू. स्वामिजी से प्रार्थना की –

2017 'ब्रह्मस्वरूप काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' की सेवा में जुटने वाले ये सब युवा हैं और आपसे आशीर्वाद लेने ही ख़ास आए हैं।

जैसे कि हम सभी जानते हैं कि युवकों को देख कर प.पू. स्वामिजी प्रसन्न नहीं, अति प्रसन्न होते हैं; प.पू. गुरुजी के साथ गए इन युवकों को देख कर वे खूब राज़ी हुए। रात को सभी हरिधाम में ठहरे। सभी के ठहरने की बहुत अच्छी व्यवस्था की गई थी।

26 की सुबह ख़ास एरेंज करे ताजे 'पोंक' का नाश्ता करने के बाद, पुनः सभी प.पू. स्वामिजी का दर्शन करने गए। प.पू. स्वामिजी ने सभा की और प.पू. गुरुजी द्वारा हर एक का परिचय प्राप्त करके, एक-एक को व्यक्तिगत आशीर्वाद दिया। अधिकतर मुक्त नए थे, सो प.पू. गुरुजी एवं कुछ मुक्तों के अलावा सभी प.पू. स्वामिजी की आज्ञा से **गुरुहरि काकाजी द्वारा प्रासादिक 'वासणा फार्म'** का दर्शन करने गए और पू. दासस्वामिजी द्वारा माहात्म्य जाना। वहाँ से लौट कर संतों द्वारा भाव से परोसा गया वेढमी का प्रसाद लिया। प.पू. गुरुजी ने थोड़ा विश्राम किया और करीब पौने चार बजे **वडोदरा** में रहते **पू. जयेशभाई** के घर जाने के लिए प्रस्थान किया। प.पू. गुरुजी ने करीब एक घंटा यहां ठहर कर, पू. जयेशभाई का भाव ग्रहण करके वे सभी के साथ एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए।

यूं, **चार दिन लगातार कॉम्पॅक्ट प्रोग्राम होते हुए** भी थकान से लापरवाह रहते **प.पू. गुरुजी**, साथ गए मुक्तों को खूब आनंद करवा कर-सभी को माहात्म्य में सराबोर करके, रात को ग्यारह बजे फ्लाईट से दिल्ली पहुँचे। सच, इन सभी युवकों को तो मानो जीवनभर की अनमोल-चिरंजीव स्मृतियाँ मिल गईं!

2016 – अन्नकूट ज्ञानामृतम् प्रसादम्

...जब राकेशभाई ने कहा कि अब गुरुजी बोलेंगे, तो मैंने पूछा कि क्या बाकी सभी वक्ता बोल चुके हैं? मतलब, आई वॉज़ नॉट एटेन्टीव कि इतना जल्दी मुझे बोलना होगा। बेशक, मैं कभी विशेष तैयारी नहीं करता। हाँ, एक-दो मिनिट तो सोचता हूँ कि किस मुद्दे पर बात करूं। लेकिन, वह सोचने का भी मुझे टाईम ही नहीं मिला, इसलिए मैंने कहा– *'चलो, एक छोटा-सा भजन गाओ।'*

सारे साल में हमें जो भी करना है या प्रतिदिन हमें जो करना है या मुझे जो कहना है वह सब दिव्यांग और राकेशभाई ने भजन में ही बता दिया। आप लोग जो यहां आए हो और 'कुटुंबभाव' की सभी ने जो बातें कीं हैं वही करना है।

एक बात जिसे मैं काफी समय से दोहराता रहता हूँ, खूब गहराई से समझना। हम सभी जो यहां इस कॅम्पस में बैठे हैं या कॅम्पस से जुड़े हुए हैं – भले ही आज यहां हाज़िर नहीं हैं – वे सभी पूर्व के संबंध वाले मुक्त हैं; वर्ना ऐसे संबंध में आ ही नहीं सकते और जुड़ भी नहीं सकते। भले ही कोई कितना बड़ा ज्ञानी हो, गीता का उपदेश और भागवत् के सारे प्रसंग दोहराता हो या वेदांत के ज्ञान से संपन्न हो, उससे यदि आप 'प्रगट' की बात करेंगे, तो उसके मन व मस्तिष्क में एकदम बैठेगी नहीं। जबकि, वह बात हम सबके दिल और दिमाग़ दोनों में कितनी आसानी से एकदम अंदर उतर गई! यही सबूत है कि हम सभी पूर्व के संबंध वाले हैं। इससे भी ज़्यादा, मैं तो कई बार सोचता हूँ कि बेशक, प्रारंभ में मैंने खूब भागादौड़ी के साथ, हरेक चीज़ में इंट्रेस्ट लेकर – जिसकी आप लोग इतनी तारीफ़ करते हैं – वो सब कुछ किया भी है। मैं ऐसा नहीं कहूँगा कि, 'नहीं-नहीं।' पर पिछले 4-5 साल से आप देखेंगे कि मैं आराम से बैठा रहता हूँ। आप आओ और कथा-वार्ता हुई तो ठीक है, वर्ना दर्शन करके चले जाते हो। ऐसी बात भी नहीं कि आपको ऐसा लगता हो कि गुरुजी को अब हम में कोई इंट्रेस्ट ही नहीं। आप समझते ही हैं कि फिज़िकल रिस्ट्रिक्शन की वजह से यह अंतर आ गया है।

दूसरी बात – मैं कई बच्चों को देखता हूँ जिनके मुझे नाम भी याद नहीं है। ये हमारी सेन्ट्रो का लड़का 'अभय' और एक दूसरा 'अभिषेक' भी है। अन्यों की बात जाने दो पर ये 'आत्मन', 'पुण्यम्' भी। **बच्चों को तो 'दीवाली मेले' या आज के ज़माने के मुताबिक़, 'मॉल' में जाने में मज़ा आता है। लेकिन, ये सब बच्चे यहीं रहते हैं।** हाँ, माँ-बाप बच्चों को कहीं घुमाने ले जाएं और वे चले जाएं, यह बात अलग है। वर्ना बच्चे तो- **धे वुड इन्टॅन्ड-लाईक कि हम मंदिर जाएँ।** आज सुबह ही किसी ने मुझे बताया कि वी.के. अग्रवाल के पुत्र राहुल का बेटा 'उज्ज्वल' सुबह उठते ही चाहता है कि मंदिर जाऊँ। मैं मानता हूँ कि छोटा है, उसकी इन्टीमसी अभी संतों के साथ डेवलप नहीं हुई होगी, लेकिन मंदिर आने की टॅन्डंसी तो रहती है। भले ही हम कहें कि लॉलीपॉप के लिए आता है, लेकिन मंदिर के साथ तो जुड़ा है! मतलब, **पूर्व के हम सब एक कुनबे के-एक परिवार के हैं और... इस भावना को इतना व्यापक करने का सबसे बड़ा श्रेय शास्त्रीजी महाराज को जाता है।**

अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना, अक्षर और पुरुषोत्तम यानि ब्रह्म और परब्रह्म – जो इटर्नल रियालिटीज़ हैं – दोनों का मानव स्वरूप में धरती पर अवतरण हुआ। शास्त्रीजी महाराज ने इनकी पहचान कराई - एहसास कराया कि इनके संबंध से हम स्वयं भी 'ब्राह्मीस्थिति' प्राप्त कर सकते हैं; जगत में रहते हुए – निर्भय, निश्चिंत और निधड़क रह कर शूरवीरता से प्रभु के होकर जीवन जी सकते हैं और उसका एक तरीका भी बताया।

अभी भजन सुना कि कोई भी प्रॉब्लम आए तो 'स्वामिनारायण - स्वामिनारायण' जपो; बड़े संतों की ऐसी बातों को हम इम्प्लीमेंट नहीं करते। मैं तो कहता हूँ कि **लाइट टोन में कही संतों की बात को भी यदि हम लेकर चलें, तो उसका भी हमें रिवार्ड मिलता है।** फिर हमें लगेगा कि अब तक हमने उनकी कही बात को माना क्यों नहीं ! आप देखते हो, डेली सुबह हमने 20 मिनिट के लिए धुन का प्रोग्राम रखा हुआ है। वैसे मैं हर चीज में इर्रेग्युलर हूँ, पर आप लोगों ने भी नोट किया होगा कि 6.40 की धुन में मैं अचूक आ कर बैठ जाता हूँ। इसकी वजह यह है कि **काकाजी सुबह और शाम धुन करने का आग्रह किया करते थे।** अपनी लाइट लॅग्वेज में वे कहते थे –

भगवान को 'धुन फेंको'; फिर जब भी कोई काम या प्रॉब्लम हो या किसी नई चीज़ या छोटे-मोटे क्रियायोगों का आरंभ करना हो, तो वह काम आएगी...

जब भी कोई प्रॉब्लम आए, तो ऐसे संतों की स्मृति के साथ 'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण' भजन आज़मा कर तो देखो। इमीडिएट्ली आपको रास्ता मिल जाएगा कि क्या करना है और क्या नहीं करना।

सभी कहते हैं कि हम यह तो करते ही हैं। जगत के अंदर भी सब कहते हैं कि हम हर काम भगवान को याद करके करते हैं। पर, आप किस भगवान को याद करेंगे ? राम, कृष्ण, माता, महादेव या वैष्णो देवी को ? मैं मना नहीं करता, उन्हें याद करो। लेकिन क्या उन्हें किसी ने मूर्तिमान धारण कर रखा है ? जबकि ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज ने यह कैसी अनूठी देन दी ! **अक्षर और पुरुषोत्तम – ब्रह्म और परब्रह्म की एक ही ऐसी उपासना है, जहां यह तत्त्व मानव स्वरूप में तुम्हारे साथ मौजूद रहेगा।** मैं हमेशा दोहराता हूँ कि जैसे अर्जुन के सारथी कृष्ण मानव स्वरूप में मौजूद थे, तब ही उसके कुरुक्षेत्र का अंत आया; कुरुक्षेत्र धर्मक्षेत्र बना और स्वयं अर्जुन 'नारायण स्वरूप' बना और आज हम देखते हैं कि 'नर-नारायण' के मंदिर बने हुए हैं। गीता का यह रहस्य अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा। **यह पॉसीबिलिटी सिर्फ और सिर्फ अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना द्वारा ही है,** जहां भगवान के होकर, भगवान की मूर्ति के साथ रहने का मौका प्रभु ने दिया हुआ है। इसीलिए हम निर्भय और निश्चिंत हैं। यह बात मैं इसीलिए कह रहा हूँ कि कोई भी प्रॉब्लम हो, तो उसके समाधान के लिए मंदिर के हॉल में सभी प्रगट स्वरूपों की मूर्तियाँ हैं। कइयों ने काकाजी - पप्पाजी को देखा है। ये मल्कानी साहेब जब - जब **'स्वामिनारायण मंत्र'** रटते होंगे, इनके ध्यान में पप्पाजी की मूर्ति फट् आ जाती होगी। उसके लिए प्रयत्न भी नहीं करना पड़ता होगा। हाँ,

मन इधर-उधर घूमता रहे वह बात अलग है। यह तो हमारा फर्ज़ है कि किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए, खुद ग़रज़ से, मन को कॉन्सन्ट्रेट करें या फिर अपने आप स्वार्थ के कारण भी वहां एनग्रॉस हो ही जाते हैं।

कोई भी यह न समझे कि हम तो आज ही आए हैं। भले आज ही आए हों, लेकिन पूर्व के होंगे तभी तुम्हारी एन्ट्री इस गेट के अंदर हुई है। देखो, हमारे ये **डॉक्टर कैलाश** एपोलो में बड़े सर्जन हैं... इनका अपने मंदिर यानि – गुणातीत समाज के साथ खूब अपनापन है। साहेब के प्रति, परछाईं दीदी के प्रति ख़ास है। हम उनके नए हॉस्पिटल का इनॉग्युरेशन करने के लिए गए थे।

मुझसे कहा – *इस हॉस्पिटल में लगाने के लिए मूर्तियां चाहिएं।*

मैंने कहा – *कौन-सी ?*

वे बोले – *अक्षरपुरुषोत्तम और परछाईं दीदी की।*

देखो, उन्हें **ऐसे संत के प्रति ऐसा भाव पैदा हो गया कि हम इनके हैं और ये हमारे हैं।**

मैं कई बार कहता हूँ कि भक्तों को देख कर संतों को ऐसा प्रतीत हो कि ओहो ! हमारे सगे आ गए और हरिभक्तों को ऐसा लगे कि ओहो ! इन संतों के रूप में हमें हमारे प्रभु मिल गए। बस यही भावना रखते रहें... ओहोहो, ऐसी प्राप्ति हुई है।

हमारा फर्ज़ है कि **इस समाज में दिव्यभाव रखें।** बच्छराज ने बहुत अच्छी बात कही कि एक ही कायदा है कि किसी का दोष ही नहीं देखो। इसकी वज़ह क्या है ?

मैंने काकाजी से यह पूछा था – *दूसरों के दोष क्यों नहीं देखना ?*

काकाजी ने कहा था – *मेरी एक बात का भरोसा रखना कि यहां इस समाज के अंदर जो आए हैं, सब भले ही स्वभावयुक्त होंगे, पर महाराज धीरे-धीरे सभी के स्वभाव छुड़वाते जाएंगे और अपने साथ जोड़ते जाएंगे। यह तो एक प्रोसेस है, जिसका सारा कंट्रोल महाराज करते हैं। तो, तुम इनके गुण-दोष मत गिनो, लॅट महाराज वर्क फॉर धेम।*

हम किसी के चौधरी न बनें। **दूसरों के स्वभाव देखने में हम अपना टाइम बिगाड़ते रहेंगे, हमारा विकास रुक जाएगा।**

सो, **आज हम गांठ मार कर जाएं कि मंदिर में भले कोई कुछ भी करता हो लेकिन इधर-उधर, डायनिंग टेबल के ऊपर इसकी चर्चा न करें। हमारी प्रगति जो एक दिन में होनी होती होगी, वह एक सॅकंड में हो जाएगी – इतना फर्क़ पड़ जाता है।**

हम सोचें कि ऐसे टाइम बिगाड़ कर हम कितना गंवाते हैं। पर, हमें यह बात समझ नहीं आती। **इसकी वज़ह यह है कि हमारी नज़र सिर्फ महाराज की वर्किंग के ऊपर नहीं रहती। मेरी अच्छाइयों को लोग जानें, उनसे मेरा संबंध रहे, संबंध की रॅकग्नीशन हो – बस इन्हीं बातों में हम लगे रहते हैं।** ऐसा न हो और इस समाज के साथ हमारा एक अपना कुटुंबभाव बना रहे। जहां ऐसा अपनापन लगेगा, वहां फिर दोष नज़र नहीं आएंगे। मैं फिर से कहता हूँ कि ऐसा अपनापन इसी समाज में मिल पाएगा। **गर्ग साहेब**

आए हैं... **इनके मसूरी के रिसोर्ट में कितने लोग आते-जाते होंगे। लेकिन, जो अपनापन इन्हें हमारे साथ हुआ वो और किसी के साथ नहीं हो पाया।** हाँ, रिस्पेक्ट जरूर रही होगी कि बड़े संत हैं-अच्छे हैं। लेकिन, ये जो संत हैं, इनके जो भगत हैं वे सब हमारे हैं – यह सिर्फ इस जगह पर ही हो पाएगा। इस जगह पर यानि – 'गुणातीत समाज' के अंदर। कितनी बड़ी बात है।

यह बात आपके दिमाग़ में बैठ जाए कि इस मंदिर के साथ जुड़ा हुआ सारा समाज हमारा परिवार है और यह समग्र समाज अक्षरधाम का समाज है, ऐसा सभी मानने लगें – यही आज नए साल की प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

– प.पू. गुरुजी के आशिष
ध्वनिमुद्रण से संकलित

Statement about ownership and other particulars about newspaper —

'भगवत् कृपा' (Form IV Rule 8)

1.	Place of Publication	:	Yogi Divine Society, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
2.	Periodicity of its Publication	:	Bi-Monthly
3.	Printer's Name	:	Prabhaker Rao
4.	Nationality	:	Indian
	Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
5.	Publisher's Name	:	
	Nationality	:	As above
	Address	:	
6.	Editor's Name	:	
	Nationality	:	As above
	Address	:	
7.	Owner's Name	:	Yogi Divine Society
	Nationality	:	Indian
	Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKER RAO
Signature of Publisher

Date: 25 January, 2017

भजन

(राग–सर जो तेरा चकराए ...)

धुन ! भजन ! एक वही ...
सर जो तेरा चकराए या दिल डूबा जाए
चल तू प्यारे धुन के सहारे
स्वामिनारायण गाए, हर मुश्किल दूर भगाए
चेहरा जो मुरझाए या दिल डूबा जाए
चल तू प्यारे धुन के सहारे
स्वामिनारायण गाए, हर मुश्किल दूर भगाए

चिंता हो दफ़्तर की, कॉलेज, स्कूल या घर की } -2
किसी समय भी, किसी जगह भी, याद करके बस मूर्ति
हो बेख़बर, कर ना फ़िकर, प्रगट प्रभु को याद तू कर
चिंता ना कर, चिंतन कर, स्वामिनारायण धुन तू कर
सारे दुःखों की एक दवा है, क्यों न आज़माए...
स्वामिनारायण गाए, हर मुश्किल दूर भगाए

धुन ज़ोर से कर या मन में , अरे कुछ भी हो जीवन में
मन की बीमारी , तन की बीमारी
छू मंतर हो पल में
धुन ज़ोर से कर या मन में , अरे कुछ भी हो जीवन में
मन की बीमारी , तन की बीमारी
भागे दुम दबा के
कर तू भजन, हो के मगन , स्वामिनारायण बोल स्वामिनारायण - 2
मस्ती की चाबी तुझे मिली है , क्यों न आज़माए
स्वामिनारायण गाए , हर मुश्किल दूर भगाए
सर जो तेरा चकराए या दिल डूबा जाए
चल तू प्यारे धुन के सहारे
स्वामिनारायण गाए, हर मुश्किल दूर भगाए
चेहरा जो मुरझाए या दिल डूबा जाए
चल तू प्यारे धुन के सहारे
स्वामिनारायण गाए, हर मुश्किल दूर भगाए -3

निमंत्रण

प.पू. गुरुजी की निश्रा में –

3 फरवरी 2017, शुक्रवार प्रातः 8:30 से 11:00

अशोकविहार 'ताड़देव' श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव

और

ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन मनाएंगे...

इस मंगलकारी अवसर पर इष्ट मित्रमण्डल सहित
उपस्थित रहने का आपको हार्दिक निमंत्रण है।

व्रतोत्सवसूची

1.	दि. 26.1.'17,	गुरुवार –	प्रजासत्ताक दिन, **गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में सुबह 8:00 से सायं 6:00 बजे तक अखंड परिक्रमा**
2.	दि. 1.2.'17,	बुधवार –	बसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती, **ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्य दिन**
3.	दि. **3.2.'17**,	**शुक्रवार** –	**गुरुहरि काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन,** श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर : दिल्ली - मुंबई का पाटोत्सव दिन
4.	दि. 7.2.'17,	मंगलवार –	एकादशी – व्रत
5.	दि. 15.2.'17,	बुधवार –	**प्र.ब्र.स्व. अक्षरविहारीस्वामिजी का प्राकट्य दिन**
6.	दि. 22.2.'17,	बुधवार –	एकादशी – व्रत
7.	**दि. 24.2.'17**,	**शुक्रवार** –	**महाशिवरात्रि**, व्रत ***(दिल्ली मंदिर में सुबह 9:30 बजे 'लघुरुद्र')***
8.	दि. **27.2.'17**,	**सोमवार** –	**प.पू. गुरुजी की 80वीं प्राकट्य तिथि (फाल्गुन शुक्ल- 1)**
9.	दि. 7.3.'17,	मंगलवार –	**गुरुहरि काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन**
10.	दि. 12.3.'17,	रविवार –	होली, होलिका दहन, **ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज की जयंती**
11.	दि. **13.3.'17**,	**सोमवार** –	धुलेन्डी, **संतभगवंत प.पू. साहेबजी की प्राकट्य तिथि प.पू. गुरुजी का 80वाँ प्राकट्य दिन** चंदनोत्सव एवं प्राकट्य सभा – सुबह 9:00 बजे से...

प्रगट स्वरूपों द्वारा आज काकाजी-पप्पाजी प्रगट ही हैं... – प.पू. आनंदी दीदी

हमें हमसे पृथक् रखना,
ताकि सच्ची भक्ति कर सकें... – प.पू. हंसा दीदी

सच्चे देवल में घंट बजा और जयकार हो रही है...
– प.पू. अश्विनभाई

सुहृद्भाव सिद्ध हो जाए, तो निष्काम धर्म सिद्ध हो जाए...

– प.पू. स्वामिजी

पप्पाजी-काकाजी बंधुजोड़ी शताब्दी हम सब इकट्ठे होकर मना रहे हैं, वह सच में हमारे समाज की आध्यात्मिक प्रगति कही जाए...

– संतभगवंत साहेबजी

दोनों स्वरूप खूब राज़ी होते होंगे। अलग-अलग प्रवाहों में बँटे हुए हम आज इकट्ठे होकर, सर्वदेशीयता से दोनों स्वरूपों की शताब्दी इकट्ठी जो मना रहे हैं...

– प.पू. गुरुजी

'बंधुबेलड़ी अजोड़ चिंतामणी रे...'

R.N.I. 28971/ 77 *(Air Mail)*

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052